

डॉ. जेफरी नीहौस, बाइबिल धर्मशास्त्र, सत्र 1, आदमिक वाचा, भाग 1

© 2024 जेफरी नीहौस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेफरी नीहौस हैं जो बाइबिल धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1, आदमिक वाचा, भाग 1 है।

नमस्ते, मैं जेफ नीहौस हूँ। मैं गॉर्डन-कॉनवेल सेमिनरी में पुराने नियम और बाइबिल धर्मशास्त्र पढ़ाता हूँ, और मैं आज यहाँ आपसे बाइबिल की वाचाओं के बारे में बात करने आया हूँ। हम जो करेंगे वह यह है कि प्रत्येक वाचा के बारे में बात करेंगे, उसके आवश्यक गुणों और प्रकृति के बारे में बात करेंगे, और यह कैसे उस समग्र पैटर्न में फिट बैठता है जो प्रभु पतन से पहले और बाद के इतिहास में मनुष्यों के साथ कर रहा है। मैं आपके सामने यह रखकर शुरू करना चाहूँगा: ठीक है, मुझे नहीं पता कि यह यहाँ कैसे दिखाई देगा, लेकिन यह यहाँ है।

क्या यह काफी बड़ा है, क्या आपको लगता है? यह मेरे बाइबिल धर्मशास्त्र के प्रस्तावना के अंत से एक पृष्ठ है, इसका पहला खंड, और यह विभिन्न वाचा योजनाओं को प्रस्तुत करता है जो प्रस्तावित की गई हैं, उनमें से कई हाल ही में हैं। तो, क्लासिक चीज़ जिसे वाचा धर्मशास्त्र कहा जाता है, लोग उस शब्द का बहुत ही शिथिल रूप से उपयोग करते हैं, लेकिन शास्त्रीय रूप से वाचा धर्मशास्त्र कुछ ऐसा है जो 17वीं शताब्दी में उत्पन्न हुआ था और शायद इसका सबसे प्रसिद्ध अभिव्यक्ति वेस्टमिंस्टर स्वीकारोक्ति है। लेकिन विचार यह है कि आपके पास एक आदमिक वाचा थी, जो कार्यों की वाचा थी, और वहाँ विचार यह है कि क्योंकि सभी वाचाएँ आखिरकार कार्यों को शामिल करती हैं, और आप देखते हैं कि अगली श्रेणी अनुग्रह की वाचा है, ठीक है, सभी वाचाएँ अनुग्रहपूर्ण हैं क्योंकि अनुग्रह का विचार यह है कि यह एक उपहार है और जब तक भगवान इसे न दें तब तक कोई दिव्य-मानव वाचा नहीं होगी।

तो फिर कामों की वाचा क्यों? अनुग्रह की वाचा क्यों? इस मॉडल के अनुसार, सोच यह है कि पतन से पहले, आदम और उसकी पत्नी काम कर सकते थे; वे वाचा को पूरा करने के लिए आवश्यक सब कुछ कर सकते थे, और इसलिए इसे कामों की वाचा कहा जाता है। पतन के बाद, किसी भी इंसान के लिए परमेश्वर की वाचा संबंधी किसी भी आवश्यकता को पूरी तरह से पूरा करना असंभव है, और इसलिए उन सभी पर विचार किया जाना चाहिए। फिर, वे वाचाएँ अनुग्रह के कारण अस्तित्व में रह सकती हैं और जारी रह सकती हैं। और आदम की वाचा के बाद की सभी बाइबिल वाचाओं को एक साथ जोड़ दिया जाता है और उन्हें अनुग्रह की वाचा कहा जाता है।

अब, शब्दावली के उपयोग के साथ कुछ समस्याएँ हैं। एक यह है कि प्राचीन दुनिया में, कोई भी संबंधित और फिर भी अलग-अलग वाचाओं के एक समूह को एक साथ नहीं रखता था और उन्हें एक वाचा नहीं कहता था, इसलिए यह वाचा शब्द का उपयोग नहीं है जो शब्द के उपयोग के तरीके के अनुरूप है; इस अवधारणा का उपयोग प्राचीन निकट पूर्व में किया गया था। इसके साथ दूसरी समस्या यह है कि नूह की वाचा एक सामान्य अनुग्रह वाचा है, और यह वास्तव में

आदम की वाचा का नवीनीकरण है, और फिर भी अनुग्रह योजना की वाचा इसे अब्राहमिक के साथ नए के माध्यम से जोड़ती है, जो सभी विशेष अनुग्रह वाचाएँ हैं।

तो सामान्य अनुग्रह का मतलब है कि यह एक ऐसी वाचा है जो दुनिया में हर किसी को दी जाती है, और यह आदमिक और नूहिक के लिए सच है। वे जारी हैं। हर कोई उनके तहत पैदा होता है। उदाहरण के लिए, आदमिक वाचा और नूहिक के अनुसार, हम सभी फलदायी हो रहे हैं और बढ़ रहे हैं, और हममें से अधिकांश ऐसा कर रहे हैं।

हम पृथ्वी को भर रहे हैं, हम इसे अपने अधीन कर रहे हैं, हम मर रहे हैं, जो कि आदमिक वाचा की अवज्ञा से आई समस्याओं में से एक थी, और इसी तरह की अन्य बातें। जबकि अब्राहमिक वाचा तब शुरू होती है जब ग्रह उसके साथ एक विशेष वाचा बनाता है, और इसका संबंध मोक्ष से है। आदमिक और नूहिक वाचाओं का मोक्ष से कोई लेना-देना नहीं है, और वे केवल ग्रह को चलते रहने देते हैं।

ताकि परमेश्वर का विशेष अनुग्रह उद्धार कार्यक्रम उस ग्रह पर हो सके और जारी रहे। तो, अब्राहमिक इसकी शुरुआत है, और नई वाचा इसकी परिणति है। लेकिन 17वीं सदी की यह क्लासिक योजना उस सब को अस्पष्ट कर देती है।

और यह बात पूरी ईमानदारी और उदारता के साथ समझनी होगी कि 17वीं सदी में लोग नहीं जानते थे कि प्राचीन पूर्वी वाचाएँ या संधियाँ क्या होती हैं। इसलिए, यह उनके लिए ईश्वर के कार्यक्रम को व्यक्त करने और पुनर्निर्माण करने का सबसे अच्छा तरीका था, और जो कुछ वे जानते थे, उसे देखते हुए यह एक बुरा प्रयास नहीं था। लेकिन हम बेहतर कर सकते हैं क्योंकि हम ज़्यादा जानते हैं।

हाल ही में जॉन वाल्टन ने अपनी पुस्तक द कॉवनेंट में एक योजना प्रस्तावित की थी। वाल्टन ने सही ढंग से महसूस किया और प्रदर्शित किया कि नूह की वाचा अब्राहमिक वाचा से भिन्न है क्योंकि यह एक सामान्य अनुग्रह वाचा है, जबकि अन्य विशेष अनुग्रह हैं। हालाँकि, वह वही काम करता है जो 17वीं शताब्दी में शास्त्रीय वाचा धर्मशास्त्रियों ने किया था, जिसमें उन्होंने वाचा शब्द का उपयोग कई अलग-अलग, हालाँकि संबंधित, वाचाओं को शामिल करने के लिए किया था।

और इसलिए, वह सभी विशेष अनुग्रह वाचाओं को लेता है और उन्हें वाचा कहता है। आप यह भी ध्यान देंगे, जो मुझे लगता है कि शब्दावली का सही उपयोग नहीं है क्योंकि, फिर से, यह वाचा शब्द का उपयोग उस तरह से नहीं कर रहा है जिस तरह से एक प्राचीन निकट पूर्वी व्यक्ति या एक बाइबिल व्यक्ति इसे समझता होगा। और हम बाइबिल को उसी तरह समझना चाहते हैं जैसे उन्होंने इसे समझा था।

आप उनके पुनर्निर्माण में देखेंगे कि कोई आदमिक वाचा नहीं है। इसलिए, वह उन विद्वानों में से एक हैं जो सोचते हैं कि आदमिक वाचा कभी नहीं थी। और हम जल्द ही इसके बारे में और भी बहुत कुछ बात करेंगे।

इस सब को देखने का एक और तरीका विलियम डी'अम्ब्रेल द्वारा प्रस्तावित किया गया है, और स्कॉट हेफेमैन ने भी यही दृष्टिकोण अपनाया है, कि सभी अनुबंध एक अनुबंध संबंध बनाते हैं, या आप कह सकते हैं कि एक अनुबंध। और वास्तव में, यदि आपके पास एक अनुबंध संबंध है, तो आपके पास एक अनुबंध है। इसमें कोई वास्तविक अंतर नहीं है।

यह, ज़ाहिर है, उन सभी भेदों को धुंधला कर देता है जिनके बारे में हमने बात की है। और इसके अलावा, इसकी अपनी समस्याएं हैं। मैं अभी सिर्फ एक का संकेत दूंगा, लेकिन हम बाद में फिर से इस पर विचार करेंगे।

अगर हम कहें कि ये सभी वाचाएँ एक वाचा सम्बन्ध को मूर्त रूप देती हैं, तो चलिए मूसा की वाचा के तहत एक व्यक्ति का प्रभु के साथ सम्बन्ध देखें। उसे इन सभी नियमों का पालन करना था। अगर वह पाप करता, तो उसे एक जानवर लाना पड़ता और मंदिर में उसका वध करवाना पड़ता, इत्यादि।

खैर, जैसा कि इब्रानियों में कहा गया है, बैलों और बकरियों का खून पाप को दूर नहीं कर सकता। ये बातें केवल प्रतीकात्मक थीं। और इसके अलावा, अब कोई मंदिर नहीं है, कोई पुजारी नहीं है जिसके पास बलिदान चढ़ाया जा सके।

और वास्तव में, मसीह हमारा बलिदान है, जो पूरी तरह से पर्याप्त है। इसलिए, हमें ऐसा कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। इसके अलावा, हमारे अंदर पवित्र आत्मा है, जैसा कि वाचा के तहत उनके पास नहीं था, और हम इसके बारे में बात करेंगे।

इसलिए, नए नियम के तहत परमेश्वर के साथ हमारा जो रिश्ता है, वह संरचनात्मक और गतिशील रूप से, मूसा के नियम के तहत एक व्यक्ति के रिश्ते से काफी अलग है। इसलिए, एक नियम के रिश्ते के बारे में बात करना वास्तव में अच्छा नहीं है। तो, हम यहाँ क्या प्रस्ताव रखते हैं? मैं यहाँ कुछ ऐसा प्रस्ताव रखता हूँ जो मुझे लगता है कि प्राचीन निकट पूर्व और बाइबल में नियम की अवधारणा के इस्तेमाल के तरीके के लिए सही है।

आदम की वाचा, जिसके अस्तित्व के लिए हम तर्क करेंगे, और नूह की वाचा मिलकर बनती है, वे दोनों सामान्य अनुग्रह की वाचाएँ हैं। चूँकि नूह ने आदम की वाचा को नवीनीकृत किया, इसलिए इसे एक साथ रखने का एक अच्छा तरीका एक कानूनी पैकेज बनाना होगा। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि आज दुनिया में हर कोई इन दोनों वाचाओं के तहत रह रहा है, चाहे वे सोचते हों कि कोई ईश्वर है या नहीं।

बाइबल में बाद में इसका एक अच्छा उदाहरण मूसा की वाचा है। प्रभु ने सिनाई में इस्राएल के साथ वाचा बाँधी। वह मोआब के मैदानों पर व्यवस्थाविवरण में अगली पीढ़ी के साथ उस वाचा को नवीनीकृत करता है।

तो, वाचा, मूसा की वाचा, सिनाई की वाचा, और उसका नवीनीकरण, मोआब की वाचा, इसे हम व्यवस्थाविवरण कहते हैं, मिलकर एक कानूनी पैकेज बनाते हैं। तो, अगर आप आज किसी यहूदी आस्तिक से पूछें, तो वह ऐसा व्यक्ति है जो सोचता है कि वह मूसा की वाचा के अधीन है

और यह नहीं मानता कि यीशु मसीह है। अगर आप उससे पूछें, तो क्या आप सिनाई वाचा के अधीन हैं या मोआब की वाचा के? वह सोचेगा, अच्छा, आप जानते हैं, आप किस बारे में बात कर रहे हैं? यह एक वाचा है।

और वास्तव में, नया नियम इन दोनों को नोमोस, यानी कानून के रूप में संदर्भित करता है। तो यह एक अच्छा उदाहरण है, और मुझे लगता है कि यह आदमिक और नूहिक वाचा के साथ क्या हो रहा है, इसे स्पष्ट करने में मदद कर सकता है। मुझे यह भी जोड़ना चाहिए कि प्राचीन निकट पूर्व में, इसका बहुत कुछ हिती संधि के रूप और उनकी प्रथाओं से संबंधित है।

जब हिती सम्राट ने एक राजा के बेटे के साथ एक वाचा, एक संधि को नवीनीकृत किया, जो उसका जागीरदार था, तो बेटा नया जागीरदार है, उन दोनों को मिलाकर, वह संधि जो सुजेन, सम्राट, हिती राजा ने जागीरदार राजा के साथ की थी, और वह संधि जो वह अब है, वह मृत राजा के बेटे के साथ नवीनीकृत कर रहा है, उन दोनों संधियों को मिलाकर एक कानूनी पैकेज बनता है। और जिस तरह से हिती लोगों ने इसे व्यक्त किया वह वही सौदा था जो आपके पिता ने मेरे साथ किया था, अब आपने मेरे साथ किया है। तो यह उन सभी का एक छोटा सा स्केच है।

तो फिर, विशेष अनुग्रह वाचाओं के बारे में क्या? खैर, वे आपस में बहुत अधिक जुड़े हुए हैं, और फिर भी हर एक अलग है। उदाहरण के लिए, हमने मूसा की वाचा और नई वाचा के बीच के अंतरों के बारे में बात की। चार विशेष अनुग्रह या रहस्योद्घाटन वाचाएँ हैं, और वे यहाँ हैं।

और अब्राहमिक वाचा, जैसा कि लोगों ने समझा है, और जैसा कि हम देखेंगे और बात करेंगे, मूसा की वाचा, दाऊद की वाचा और नई वाचा की पूर्वसूचनाओं या वादों, प्रत्याशाओं को मूर्त रूप देती है। और हम तर्क देंगे, हालांकि, अब्राहमिक, मूसा की वाचा और दाऊद की वाचा अब वाचाओं के रूप में कार्य नहीं करती क्योंकि वे सभी मसीह के माध्यम से नई वाचा में ली गई और पूरी की गई हैं। इसलिए, कोई यह कह सकता है कि, एक अर्थ में, वे नई वाचा में जीवित हैं, लेकिन उनमें से कोई भी अब कार्य नहीं करती है।

अब्राहमिक वाचा, उसका संकेत खतना है, और हमें वाचा के संकेत के रूप में अब खतना नहीं करवाना है। इसलिए, यदि अब्राहमिक वाचा में प्रवेश के लिए आवश्यक संकेत को निरस्त कर दिया गया है, तो वाचा अब और काम नहीं कर सकती। हम जानते हैं कि मूसा की वाचा अब वाचा के रूप में काम नहीं करती।

इब्रानियों का कहना है कि यह खत्म हो रहा है। यह पर्याप्त नहीं था। कुलुस्सियों 2 कहता है कि मसीह ने इसे क्रूस पर चढ़ा दिया।

उसने इसे रद्द कर दिया। और दाऊद की वाचा, बेशक, मसीह में पूरी हो गई है। वह अब राजाओं का राजा है, और इस्राएल पर कोई दूसरा राजा नहीं होगा, यहाँ तक कि सच्चे इस्राएल, परमेश्वर के इस्राएल पर भी नहीं, जो कि कलीसिया है।

तो यह एक रेखाचित्र है। यह इस बात का पूर्वानुमान है कि हम इस मामले में कहाँ जा रहे हैं। और फिर हम आदमिक या सृष्टि वाचा को देखकर शुरू करेंगे।

ठीक है, और यह संक्षेप में संक्षेप में होगा, लेकिन आप अपने सामने वही शब्द रख सकते हैं, कुछ विचार जो हमने इस्तेमाल किए हैं, परिचयात्मक रूप में उन पर बात की है। वेस्टमिंस्टर स्वीकारोक्ति से, मनुष्य के साथ किया गया पहला वाचा कार्यों का वाचा था जिसमें आदम को और उसके द्वारा उसके वंशजों को पूर्ण और व्यक्तिगत आज्ञाकारिता की शर्त पर जीवन का वादा किया गया था। और फिर मनुष्य ने अपने पतन के द्वारा, उस वाचा द्वारा खुद को जीवन के अयोग्य बना लिया, प्रभु ने एक दूसरी वाचा बनाने की कृपा की, जिसे आम तौर पर अनुग्रह की वाचा कहा जाता है, जिसमें वह पापियों को यीशु मसीह द्वारा जीवन और उद्धार मुफ्त में प्रदान करता है, उनसे उस पर विश्वास करने की मांग करता है, और इसी तरह।

बेशक, इसमें बहुत सी सच्ची बातें हैं। समस्या, जैसा कि हमने संकेत दिया है, चरित्र चित्रण, कार्यों की वाचा और अनुग्रह की वाचा है, जो प्राचीन दुनिया या बाइबल में वाचा शब्द के इस्तेमाल के तरीके के अनुसार सच नहीं है, शायद। फिर, जॉन वाल्टन की किताब।

अगर हम ऐसी वाचाओं की पहचान करने के लिए बाइबल के पाठ पर निर्भर करते हैं, यानी हमारे लिए ईश्वरीय-मानव वाचाएँ, तो हम नूह के समय में पहली वाचा पाते हैं। अब, जैसा कि नोटों में थोड़ी देर में दिखाई देगा, यहाँ एक समस्या है, जो विद्वान कभी-कभी करते हैं, अगर मैं ऐसा कह सकता हूँ। और वह यह है कि, वे सोचते हैं कि अगर शब्द नहीं है, तो चीज़ नहीं है।

और यह बिल्कुल भी टिकाऊ दृष्टिकोण नहीं है। लेकिन यही बात है। वह कहते हैं कि आदम की वाचा को वाचा नहीं कहा जाता, जो कि बिल्कुल सच है।

इसलिए, वहाँ कोई वाचा नहीं है। फिर, अगला बिंदु यह है कि जबकि नूह के साथ वाचा स्पष्ट रूप से परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक समझौते का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि वास्तव में इसे नूह की कहानियों में वाचा कहा जाता है, इसे परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के कार्यक्रम में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। और जैसा कि हमने कहा है, हम इससे पूरी तरह सहमत हैं।

यह एक सामान्य अनुग्रह की बात है, न कि कोई विशेष अनुग्रह की बात। एंथनी हर्किमर ने भी इसी तरह अपनी पुस्तक ऑन द इमेज ऑफ गॉड में, जो एक बहुत बढ़िया पुस्तक है, लिखा है कि, आदम की वाचा के संबंध में, बाइबल इस व्यवस्था को वाचा नहीं कहती है। लेकिन फिर कोई कहेगा, अच्छा, होशे 6-7 के बारे में क्या? आदम की तरह, उन्होंने वाचा को तोड़ा है।

यह वास्तव में अस्पष्ट है, क्योंकि, आखिरकार, हिब्रू में, आदम शब्द का मतलब केवल मानवता हो सकता है। अगर इसका मतलब मानवता है, तो यह नूह की वाचा को संदर्भित कर सकता है। और वास्तव में, ऐसा लगता है कि यशायाह 24 में इसका संकेत दिया गया है, जैसा कि हम देखेंगे।

लेकिन फिर से, इस तथ्य का मतलब यह नहीं है कि इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह चीज़ मौजूद नहीं है। बाइबल ईश्वर को दोनों में से कोई नहीं कहती है। और फिर भी, ईश्वर एक त्रिएक ईश्वर है।

मैं यह भी कहना चाहूँगा कि बाइबल नूह को भविष्यवक्ता नहीं कहती, लेकिन उसके हर काम से यह बिलकुल स्पष्ट लगता है, कि वह परमेश्वर से सुनता है और उसकी आज्ञाएँ बताता है और वाचा की मध्यस्थता करता है, कि वह भविष्यवक्ता है। इसलिए, यहाँ एक और बात, हर्किमर के अनुसार, उत्पत्ति के इन शुरुआती अध्यायों में वाचा की शपथ या पुष्टि समारोह का कोई संकेत नहीं है। यही बात नूह की वाचा के बारे में भी सच है, जिसे अभी भी वाचा कहा जाता है।

हर्किमर इसे पहचानते हैं और कहते हैं, ठीक है, चूँकि बाइबल स्पष्ट रूप से ईश्वरीय अनुग्रह के इस उपहार को, यानी नूह की वाचा को, वाचा कहती है, हमें भी इसे ऐसा ही मानना चाहिए, भले ही वाचा की शपथ या वाचा की पुष्टि का कोई रिकॉर्ड न हो। जैसा कि हम देखेंगे, मुझे लगता है कि ऐसे कारण हैं, जिनकी वजह से सामान्य अनुग्रह वाचाओं में वाचा की पुष्टि नहीं होती है, लेकिन आदम की वाचा के खिलाफ हर्किमर के मुख्य बिंदु यही हैं। खैर, हम तब ध्यान देंगे कि अगर नूह की वाचा को शपथ या पुष्टि के बिना वाचा कहा जा सकता है, तो आदम की वाचा भी उनके बिना वाचा हो सकती है।

खैर, फिर आदमिक वाचा के लिए क्या सबूत हैं? यह कुछ ऐसा है जिसे मैंने सबसे पहले सिनाई में ईश्वर के सामने प्रस्तावित किया था, और मुझे लगता है कि इसमें कुछ योग्यता है, लेकिन इसे समझने की आवश्यकता है। दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व संधि का स्वरूप कुछ ऐसा है जो हित्तिियों द्वारा निर्मित किया गया था। इसका उपयोग मूसा ने दिव्य-मानव वाचाओं को स्पष्ट करने में किया था, और यह दाऊद की वाचा में भी अपने मूल रूप में दिखाई देता है, जो मूसा से बहुत बाद की है।

प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व हित्ती, बल्कि, संधि का स्वरूप, मुझे ध्यान देना चाहिए, अलग है। इसमें ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव है। इसमें आशीर्वाद का अभाव है, और तब राज करने वाली शक्ति, तब महान साम्राज्य, असीरियन साम्राज्य था, और एक से अधिक विद्वानों ने उल्लेख किया है कि असीरियन, जिनकी तुलना हाल के इतिहास के नाज़ियों से की जा सकती है, जिन्होंने पूरी क्रूरता से शासन किया, विद्रोही जागीरदारों को फिर से जीतते थे, उन्हें जिंदा खाल उतारते थे, उनकी खाल शहर की दीवारों पर लपेटते थे, उन्हें अंधा करते थे, उनके हाथ काट देते थे, और इसी तरह, उन्होंने किसी को भी आशीर्वाद देने का वादा करने की आवश्यकता महसूस नहीं की जो उनकी संधियों का पालन कर सकता था, और उन्होंने कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना प्रदान नहीं की।

ऐतिहासिक प्रस्तावना और आशीर्वाद प्रेरक कारक हैं। ऐतिहासिक प्रस्तावना का उद्देश्य उन अच्छे कामों को दिखाना है जो सुजैन ने जागीरदार के लिए किए हैं, और इसलिए जागीरदार को संधि का पालन करना चाहिए। आशीर्वाद वे अच्छे काम हैं जो देवता जागीरदार के लिए करेंगे यदि जागीरदार आज्ञाकारी है, और इसलिए, फिर से, जागीरदार को संधि का पालन करना चाहिए।

सोच यह है कि पहली सहस्राब्दी में असीरियनों के साथ, उन्हें ऐसी चीजों का वादा करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। वे डर से प्रेरित थे, न कि वादों से या किसी को यह याद दिलाने की कोशिश से कि वे उनके लिए कितने अच्छे थे। इसलिए, किसी भी मामले में, पुराने नियम में

बाइबिल के दिव्य-मानव वाचाएँ सभी समानांतर हैं और उनमें दूसरी सहस्राब्दी संधि के आवश्यक तत्व हैं जो उपयोग में थे।

संयोग से, मूसा को मिस्र के राजकुमार के रूप में पाला गया था, इसलिए उसे कूटनीतिक शिक्षा मिली होगी। वह इस रूप से पूरी तरह परिचित रहा होगा। उस काल में हितियों और मिस्रियों के बीच संधियाँ थीं।

तो, जब हम उत्पत्ति 1.1 से 2.3 तक देखते हैं तो हमें क्या मिलता है? हम पाते हैं कि इसमें द्वितीय सहस्राब्दी संधि के आवश्यक तत्व हैं। इसका एक शीर्षक है। संधियों में शीर्षक सुजरेन या सम्राट, महान राजा का परिचय देता था, जैसा कि शब्द था।

और इसलिए, हम उत्पत्ति 1.1 में क्या पढ़ते हैं? हम पढ़ते हैं कि शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। खैर, यह राजत्व के दावे की तरह नहीं लग सकता है, लेकिन प्राचीन दुनिया में, यह सार्वभौमिक रूप से समझा जाता था कि यदि कोई ईश्वर एक सृष्टिकर्ता ईश्वर था, तो वह हर चीज़ का राजा था, और सारा अधिकार उसी से आता था। इसलिए, मूसा के दिनों में या बाद में कोई व्यक्ति जिसने उत्पत्ति 1.1 पढ़ा होगा, वह समझ गया होगा कि यह दावा किया जा रहा है कि यह एलोहिम, परमेश्वर, सृष्टिकर्ता है।

वह न केवल निर्माता है, बल्कि वह हर चीज़ का राजा है। वह अधिपति है। वह सम्राट है।

ऐतिहासिक प्रस्तावना को संधियों में महान राजा के शब्दों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। और तो फिर उसके बारे में क्या? खैर, मुद्दा यह है कि हितियों के लिए संधि जागीरदार के जीवन को संरचित करने वाली थी। संधि में वे सभी शर्तें दी गई थीं जिनके तहत जागीरदार को रहना होगा और वे शर्तें जिनका पालन जागीरदार को करना होगा।

यहाँ, आपके पास प्रभु द्वारा, उनके शब्दों द्वारा दुनिया का निर्माण है। और इसलिए, प्रभु, महान राजा के रूप में, वस्तुतः उस वास्तविकता की संरचना कर रहे हैं जिसमें जागीरदार, पुरुष और महिला रहेंगे। और इसलिए यह समानांतर है।

प्राचीन निकट पूर्वी संधियों में कुछ शर्तें हैं, जो जागीरदार को करनी होती थीं, और आपको उत्पत्ति 1.28 में वे मिलती हैं। एक बयान था। संधियों में एक नियमित वाचन था। मुद्दा यह था कि प्रत्येक राजा के पास संधि की एक प्रति होगी।

प्रत्येक राजा अपनी प्रति अपने देवताओं के मंदिर में जमा करेगा। बेशक, हम यहाँ बहुदेववादी संस्कृतियों की बात कर रहे हैं। और नियमित रूप से वाचन किया जाएगा ताकि कोई भी राजा अनजाने में संधि को न तोड़ दे।

बेशक, हमें यह दस वचनों में मिलता है। इसे तम्बू में जमा किया जाता है। और व्यवस्थाविवरण में, जब वाचा का नवीनीकरण किया जाता है, व्यवस्थाविवरण 17 में, हमें बताया गया है कि किसी भी भावी राजा को इसकी एक प्रति बनानी चाहिए ताकि वह इसे पढ़ सके और अनजाने में वाचा को न तोड़ दे।

तो, वहाँ बहुत सारी समानताएँ हैं। वे चीजें यहाँ मौजूद नहीं हैं क्योंकि परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी को कोई लिखित संधि नहीं दी थी। और यह इस कथा और साथ ही साथ अन्य सभी बाइबिल वाचा कथाओं के बारे में समझने के लिए महत्वपूर्ण बात है।

हमारे पास प्रभु की ओर से कोई संधि दस्तावेज़ नहीं है। इसके सबसे करीब व्यवस्थाविवरण है। लेकिन हमारे पास बाइबिल की कहानियों का एक क्रम है जो प्रभु द्वारा की गई वाचाओं को मूर्त रूप देता है और उन्हें अभिव्यक्त करता है।

उत्पत्ति 1:1 से 2:3 तक यही है। यह एक कथात्मक अंश है जो परमेश्वर द्वारा ब्रह्मांड की वाचागत संरचना और उसमें पुरुष और स्त्री को रखने को स्पष्ट करता है। और इसलिए इन बातों को इसी तरह प्रस्तुत किया गया है।

और इसलिए, लेकिन यह निश्चित रूप से समझा गया है कि ये कथाएँ वाचाओं को स्थापित करती हैं, ऐसा कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 7 हमें दाऊद की वाचा देता है। वहाँ वाचा शब्द का कभी प्रयोग नहीं किया गया है।

और फिर भी इसे उस वाचा की अभिव्यक्ति माना जाता है जो प्रभु ने दाऊद के साथ की थी। और हम इस पर गौर करेंगे। खैर, इन वाचाओं में गवाह भी थे।

संधि में यह विचार था कि यदि जागीरदार द्वारा संधि तोड़ी गई, तो देवता वाचा तोड़ने वाले, संधि तोड़ने वाले को दण्ड देंगे। उत्पत्ति 1, 31 में, संभवतः, हमारे पास परमेश्वर के द्वारा किए गए कार्यों के साक्षी के रूप में है। वह यह सब देखता है और कहता है कि यह बहुत अच्छा है।

तो, वह इन सबका साक्षी है। जैसा कि हमने बताया, आशीर्वाद हैं। वह पुरुष और स्त्री को आशीर्वाद देता है, और उन्हें ये शर्तें देता है।

वह सातवें दिन को आशीर्वाद देता है, उत्पत्ति 2:3। उत्पत्ति 2.17b में शाप तत्व भी है, जहाँ आदम से कहा जाता है कि तुम इस पेड़ का फल मत खाओ। हम उत्पत्ति 1 और उत्पत्ति 2 के बीच के संबंध के बारे में बात करेंगे, लेकिन इसे अभी संक्षिप्त रूप से स्पष्ट करने के लिए, उत्पत्ति 1 आपको समग्र दृष्टिकोण देता है। उत्पत्ति 2 परमेश्वर और पुरुष और स्त्री के बीच के संबंध पर ज़ूम करता है।

तो, एक तरह से, उत्पत्ति 2 उत्पत्ति 1.27 पर ज़ूम करता है, जब आप पढ़ते हैं कि भगवान ने पुरुष और महिला को, यकीनन, अपनी छवि में बनाया। और इसलिए, यह प्राचीन निकट पूर्वी कथाओं के साथ असामान्य नहीं है। आपको एक सामान्य विवरण मिलता है, और फिर आप इसके कुछ पहलुओं पर ज़ूम करते हैं।

यह सब कहने का मतलब यह है कि उत्पत्ति 2 में जो कुछ भी आप पढ़ते हैं वह उत्पत्ति 1 से संबंधित है। यह आदमिक वाचा कहलाने वाले रिश्ते की प्रकृति का एक और वर्णनात्मक अन्वेषण या स्पष्टीकरण है। इसलिए जब आप उत्पत्ति 2:17 में कोई आदेश और निषेधाज्ञा पढ़ते हैं या बगीचे के किसी भी पेड़ से कोई अनुमति और निषेधाज्ञा पढ़ते हैं, लेकिन इस एक पेड़ से नहीं, तो

इसे कुछ ऐसा समझा जाता है जो सौदे का हिस्सा है। यह इस बात में आदम के साथ परमेश्वर के रिश्ते का हिस्सा है, जिसे उत्पत्ति 1 या 2 या कभी भी सामग्री में वाचा नहीं कहा जाता है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि प्रदर्शन से पता चलता है कि इसमें वे सभी तत्व या मुख्य तत्व हैं, जो आपको प्राचीन निकट पूर्वी संधि में मिलेंगे।

इसलिए, मुझे लगता है कि अगर कोई यहाँ निष्पक्ष होना चाहता है, तो उसे इस बात से सहमत होना होगा कि इस कथा में ये तत्व एक वाचा संबंध को व्यक्त करते हैं। बाद में वाचा संबंध किसे कहा जाएगा? अब, अगर कोई इसे वाचा कहने से पहले ही रुकना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है।

मुझे नहीं पता कि कोई ऐसा क्यों करेगा क्योंकि इसमें वाचा के सभी तत्व हैं। इसमें सभी तत्व हैं। मैं यहाँ एक और बात कहूँगा, और यहीं से यह बात आती है। और मैंने इस पर खंड एक में तर्क दिया है।

यह आम तौर पर माना जाता है कि इन सभी दिव्य-मानव वाचाओं में हिती संधि के तत्व हैं, इसलिए इन बाइबिल लेखकों ने एक ऐसे रूप को अपनाने का विकल्प चुना जिसे कानूनी रूप के रूप में समझा जा सके। मुझे लगता है कि इस सब की उत्पत्ति को देखने का शायद एक बेहतर तरीका है, और इसमें कोई व्यंग्य नहीं है, और वह यह है कि सभी दिव्य-मानव वाचाएँ परमेश्वर की प्रकृति के बारे में कुछ बताती हैं। उत्पत्ति 1:1 से 2:3, सृष्टि का विवरण, हमें परमेश्वर की प्रकृति के बारे में बताता है।

वह एक महान राजा है। वह अपने लोगों को अच्छी चीजें मुहैया कराता है। वह उन्हें आशीर्वाद देता है।

उसके पास उनसे अपेक्षाएँ हैं, इत्यादि, और वह अपनी स्वयं की वफ़ादारी और भलाई का गवाह है। बाद में, प्रकाशितवाक्य 1:5 में, यीशु को वफ़ादार गवाह कहा गया है। वह अपने पिता के स्वभाव और भलाई का वफ़ादार गवाह है।

तो, ये सभी वाचाएँ परमेश्वर के स्वभाव को स्पष्ट करती हैं। उत्पत्ति 1:1 से 2:3 हमें यह दिखाता है। समय की परिपूर्णता में, हितियों ने परमेश्वर की छवि में निर्मित एक साम्राज्य का विकास करते हुए, एक ऐसा रूप विकसित किया जो कुछ इस तरह व्यक्त करता है, और ऐसा क्यों होगा? परमेश्वर द्वारा बनाए गए किसी भी व्यक्ति या वस्तु के साथ उसका संबंध अनिवार्य रूप से एक शक्ति संबंध है, और इसलिए हितियों ने उसकी छवि में बनाया, उसे नहीं जानते हुए, लेकिन एक साम्राज्य होने और जागीरदारों के साथ शक्ति संबंध बनाने से एक कानूनी रूप सामने आया जिसने उस शक्ति संबंध को व्यक्त किया और उन तत्वों को शामिल किया जिनके बारे में हमने अभी बात की है।

आज पूरी दुनिया में यही सच है। अगर आपके पास नौकरी है, तो आपका एक बॉस भी है। बॉस आपका अधिपति है।

बॉस आपको अच्छी चीजें देता है, जो आपको अपने कार्यस्थल के लिए चाहिए, जैसे कि एक क्यूबिकल, एक कंप्यूटर, एक कार, जो भी हो। उसकी कुछ ज़रूरतें होती हैं, जो ऐसी चीजें हैं जो आपको काम पर करनी होती हैं। अगर आप उन्हें पूरा करते हैं, तो आप भाग्यशाली हैं।

आपको अपनी नौकरी बरकरार रखने का मौका मिलता है। आपको वेतन वृद्धि मिलती है। आपको पद में भी तरक्की मिलती है।

अगर आप व्यवस्था के मुताबिक काम नहीं करते, तो आप अभिशप्त हो जाते हैं। आपकी तनख्वाह कम हो जाती है। आपको पदावनत कर दिया जाता है।

आपको नौकरी से निकाल दिया जाता है। और इसके गवाह भी होते हैं। एक अनुबंध होता है।

तो, उत्पत्ति 1:1 से 2:3 और ये सभी दिव्य वाचाएँ परमेश्वर और वाचा के पक्षकारों के बीच एक शक्तिशाली संबंध को स्पष्ट करती हैं। और फिर, परमेश्वर की छवि में बनाए गए हितियों ने एक ऐसा रूप बनाया जो उस तरह के रिश्ते को बहुत अच्छी तरह से दर्शाता है। और इसलिए यह बाइबल में भी दिखाई देता है।

आदम की वाचा के लिए अन्य सबूतों के बारे में क्या? खैर, हमारे पास नूह की वाचा है। उत्पत्ति 6 में, प्रभु कहते हैं, मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करूँगा, और तुम जहाज़ में प्रवेश करोगे और इसी तरह। यहाँ क्रिया और वाचा मुहावरे नूह की वाचा के लिए उपयोग किए जाते हैं।

उत्पत्ति 17 में भी यही शब्द इस्तेमाल किए गए हैं, और हम थोड़ी देर में इस बारे में बात करेंगे कि ऐसा क्यों है। हिब्रू में ये शब्द नाथन बेरीट और हकीम बेरीट हैं। और इनका शाब्दिक अर्थ है वाचा देना और वाचा को कायम रखना।

शब्दकोश आपको इन क्रियाओं की विभिन्न परिभाषाओं या व्याख्याओं के बीच बताएंगे कि इन मुहावरों की क्रियाओं का अर्थ पहला, नाथन, देना और दूसरा, खड़ा करना हो सकता है। लेकिन इन क्रियाओं की एक समझ यह है कि उन्हें लागू करना है। और यही तर्क है, यही वह समझ है जिसके लिए मैं इन अंशों में तर्क दूँगा।

तो, यह अवधारणा इस विचार के लिए द्वार खोलती है कि एक वाचा है जो अस्तित्व में है, और प्रभु अब इसे लागू करने जा रहे हैं। यह उत्पत्ति 17 में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जैसा कि हम देखेंगे क्योंकि कुछ लोग तर्क देते हैं कि उत्पत्ति 17 उत्पत्ति 15 से एक अलग वाचा है। लेकिन इसे देखने का बेहतर तरीका, मेरा मानना है, यह है कि उत्पत्ति 15 में, प्रभु वाचा बनाता है।

वह उत्पत्ति 15:18 में हिब्रू मुहावरे के रूप में वाचा को काटता है। और फिर उत्पत्ति 17 में, वह इसे लागू करता है। यह उतना अजीब नहीं है जितना पहली बार सुनने पर लग सकता है।

आप अपना घर बेचने के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। लेकिन हो सकता है कि इसे लागू होने में कुछ हफ्ते लग जाएँ, इससे पहले कि घर खरीदने वाला व्यक्ति उसमें रहने लगे,

और आप पूरी तरह से उससे बाहर चले जाएँ। इसलिए, यह बिल्कुल भी अजीब अवधारणा नहीं है।

इसका उपयोग क्यों किया जाता है, इन शब्दों का उपयोग नूह की वाचा में क्यों किया जाता है? और इसके निहितार्थ क्या हैं? खैर, निहितार्थ, मैं यहाँ अपने नोट्स के हर हिस्से को पढ़ने नहीं जा रहा हूँ, और यहाँ इन क्रियाओं के थोड़े अलग-अलग अनुवाद हैं, जिनका मैंने भी उपयोग किया है, लेकिन जो लगभग एक ही बात को अंजाम देते हैं, वाचा को पूरा करना या लागू करना, इसे देना, इसे लागू करना, इसे देते रहना। नूह की वाचा में इन शब्दों का उपयोग क्यों किया जाता है? डम्ब्रेल ने अपनी पुस्तक में देखा है कि हमने इन क्रियाओं के उपयोग का संदर्भ दिया है, जो यह सुझाव देता है कि एक पहले से मौजूद वाचा है, जिसकी वे पुष्टि कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि यह सच्चाई के बहुत करीब है।

यह तस्वीर का एक हिस्सा है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, नूह की सामग्री में इन क्रियाओं का उपयोग यह दर्शाता है कि प्रभु वास्तव में एक पूरी तरह से नई वाचा नहीं बना रहा है। वह पहले से मौजूद वाचा को नवीनीकृत कर रहा है।

मुझे लगता है कि इन शब्दों का इस्तेमाल करने के पीछे एक और कारण भी है। पुराने नियम में वाचा बांधने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द क़रात है बेरीट , या वाचा काटना। और वह समारोह जिसे हम उत्पत्ति 15 में पढ़ते हैं, जहाँ प्रभु ने अब्राहम को जानवरों को आधे में काटने के लिए कहा और फिर वह टुकड़ों के बीच से गुज़रा, बहुत स्पष्ट रूप से उस मुहावरे का अर्थ दर्शाता है।

खैर, उस तरह की कटाई और उस तरह के मार्ग, प्राचीन दुनिया में वहाँ क्या होता था कि सुजरेन जागीरदार के साथ एक संधि करता था। जानवरों को काटा जाता था और अलग रखा जाता था, जैसा कि आप उत्पत्ति 15 में पढ़ते हैं। और फिर जागीरदार टुकड़ों के बीच से चलता था।

और प्रतीकात्मकता यह है कि, अगर मैं, जागीरदार, संधि तोड़ता हूँ, तो वही हथ्र मुझ पर हो जो इन जानवरों पर हुआ है। और वास्तव में, यिर्मयाह 34 में बिल्कुल यही लिखा है। खैर, इन सामान्य अनुग्रह वाचाओं में, ऐसा कोई अभिशाप नहीं है।

इसका मतलब है, विशेष अनुग्रह वाचाएँ। यदि आप पर्याप्त रूप से अवज्ञाकारी हैं, तो आपको उनसे बाहर रखा जा सकता है। मूसा की वाचा शायद इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है, लेकिन हम इसके बारे में और बात करेंगे। आप सामान्य अनुग्रह वाचाओं से बाहर नहीं रखे जा सकते, यह तर्क दिया जा सकता है।

आप मरेंगे, हम सभी मरते हैं, लेकिन आप एक बहुत बुरे व्यक्ति हो सकते हैं और उन सभी तरह के मानकों को तोड़ सकते हैं जिनके अनुसार प्रभु आपको जीने के लिए कहेंगे, और फिर भी एक परिपक्व वृद्धावस्था तक जीवित रह सकते हैं। इसलिए, उत्पत्ति 9 में, जहाँ प्रभु अंततः ऐसा करता है, या इसे लागू करता है, या इसकी पुष्टि करता है, या इस वाचा को नवीनीकृत करता है, एक अलग मुहावरे की आवश्यकता थी। और इसलिए इन मुहावरों का उपयोग किया जाता है ताकि

यह विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त हो कि यहाँ एक वाचा चल रही है, लेकिन यह ऐसी नहीं है जिससे इसे तोड़ा जा सके।

खैर, आदमिक वाचा के लिए भविष्यवक्ताओं के साक्ष्य के बारे में क्या? हमने होशे 6:7 का उल्लेख किया है, और इसकी अस्पष्टता। लेकिन यिर्मयाह में भी, यिर्मयाह भगवान के आदेशों की बात करता है जो सूर्य, चंद्रमा और सितारों की चमक को नियंत्रित करते हैं। यह शब्द आदेश एक तकनीकी शब्द है, यहाँ टर्मिनस टेक्निकस, क्योंकि यदि आप कभी-कभी कुछ लैटिन और जर्मन का उपयोग नहीं करते हैं, तो लोग आपको वास्तव में विशेषज्ञ नहीं मानते हैं।

तो, आपको उन शब्दों को कभी-कभी इस्तेमाल करना होगा। तो, ये वे शब्द हैं जो वाचा के क्षेत्र में इस्तेमाल किए जाते हैं, और हम इसे मूसा की वाचा से जानते हैं। और फिर यिर्मयाह 33 में, बहुत स्पष्ट रूप से, प्रभु, संयोग से, यिर्मयाह के इन अंशों में दाऊद की वाचा के प्रति अपनी वफ़ादारी के बारे में बात कर रहे हैं।

इसलिए, वह कह रहा है कि यदि तुम दिन के साथ मेरी वाचा और रात के साथ मेरी वाचा को तोड़ सकते हो ताकि दिन और रात अपने नियत समय पर न आएँ, तो मैं दाऊद के प्रति वफ़ादार नहीं रहूँगा। और इसी तरह, पद 25 में, इस प्रकार कहता है, यहोवा, यदि मैंने दिन और रात और आकाश और पृथ्वी के नियमों के साथ अपनी वाचा स्थापित नहीं की है। ये कथन और वे वाक्यांश जिनका वे उपयोग करते हैं, दिन और रात, आकाश और पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा और सितारों की चमक, और इसी तरह, वे निश्चित रूप से इस मामले में वाचा संबंधी शब्दावली के साथ उत्पत्ति 1 की ओर इशारा करते हैं।

तो, हमने पहले कहा है कि आदम की वाचा को बाइबल में वाचा नहीं कहा गया है। और अगर हम इसके बारे में सख्त होने जा रहे हैं, जो हमें होना चाहिए, तो यह सच है। हालाँकि, यिर्मयाह के ये कथन इस बात का बहुत संकेत देते हैं कि सृजित व्यवस्था अपनी प्रकृति में वाचाबद्ध थी।

खैर, नए नियम के प्रमाण के बारे में क्या? खैर, बेशक, यीशु दूसरे आदम के रूप में हैं। और यीशु नए करार के मध्यस्थ हैं। और इसलिए अगर वह दूसरा आदम है, और वह एक भविष्यवक्ता है, वह अपने पिता से सुनता है, और वह वही करता है जो उसके पिता करने को कहते हैं, तो ये आदम के साथ स्पष्ट समानताएँ हैं।

उसने निश्चित रूप से भगवान की बात सुनी। उसने कुछ समय तक वही किया, जो भगवान ने उसे करने को कहा था। भगवान उसके पिता थे।

लूका की वंशावली पीछे की ओर जाती है और आदम को परमेश्वर के पहले पुत्र के रूप में संदर्भित करती है। इसलिए यदि आदम इन विभिन्न तरीकों से यीशु के समानांतर है, तो यह समझ में आता है कि वह वाचा के मध्यस्थ के रूप में भी यीशु के समानांतर है। इसके अलावा, और मुझे इसके बारे में भी एक टिप्पणी करने दें, जैसा कि हम देखेंगे।

मुझे लगता है कि बाइबल में भविष्यवक्ताओं की श्रेणियों को समझने के कई तरीके हैं। निश्चित रूप से पुराने नियम में और यीशु तथा नए नियम में दो बड़ी श्रेणियाँ हैं। एक श्रेणी ऐसी है जिसे वाचा मध्यस्थ भविष्यवक्ता कहा जाना चाहिए।

ये वे भविष्यवक्ता हैं जिनके माध्यम से परमेश्वर लोगों के एक बड़े समूह के लिए वाचा की मध्यस्थता करता है। और इसलिए यहाँ तर्क दिया जा सकता है कि आदम पहले हैं, नूह अगले हैं, और अब्राम उसके बाद आते हैं, और फिर मूसा और दाऊद, और फिर, निश्चित रूप से, नए नियम में, यीशु नए और अंतिम दिव्य-मानव वाचा के मध्यस्थ के रूप में हैं। अन्य भविष्यवक्ता जिनके बारे में हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, उन्हें वाचा के मुकदमे के दूतों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

और ये वास्तव में मूसा की वाचा के अंतर्गत दिखाई देते हैं क्योंकि यह पहली बार है कि परमेश्वर के लोगों के पास एक कानून है जो व्यक्त किया गया है और जिसका उन्हें पालन करना है। और जब वे इसका पालन नहीं करते हैं, तो भविष्यद्वक्ता, प्रभु, कानून तोड़ने वालों के रूप में उनके खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा करते हैं। मुझे लगता है कि कभी-कभी चर्च में भी ऐसा हो सकता है, हालाँकि, जैसा कि पॉल 1 कुरिन्थियों 14 में कहता है, जो व्यक्ति भविष्यवाणी करता है वह चर्च का निर्माण करता है।

तो शायद, आमतौर पर चर्च में, भविष्यवाणी का मतलब प्रोत्साहन, शायद निर्देश देना होता है। लेकिन फिर, फटकार भी शिक्षाप्रद हो सकती है। इसलिए मुझे लगता है कि इसके लिए जगह है।

वैसे भी, मुझे लगता है कि जब हम बाइबल में भविष्यवक्ताओं और उनके काम करने के तरीके के बारे में सोचते हैं तो ये श्रेणियाँ हमारे लिए अच्छी साबित होंगी। लेकिन आदमिक वाचा के सबूतों पर वापस आते हैं। खैर, अगर हम यीशु को दूसरे आदम के रूप में देखते हैं, तो हम उसके काम के परिणामों को भी देखते हैं।

यह एक नई मानवता में परिणत होने जा रहा है। और जिन लोगों ने आत्मा प्राप्त की है, उन्हें पहले से ही इसका पूर्वानुभव है कि इसका क्या अर्थ है क्योंकि हम मसीह में नए प्राणी बन रहे हैं; जैसा कि पॉल 2 कुरिन्थियों 5 में कहता है, जो कोई भी मसीह में है वह एक नया संकट, एक नया प्राणी, एक नई रचना है। लेकिन हम एक नए स्वर्ग और पृथ्वी की भी आशा करते हैं।

इसलिए, यदि आपके पास नई मानवता और नए स्वर्ग और पृथ्वी को नए वाचा के माध्यम से, दूसरे आदम की मध्यस्थता के माध्यम से उत्पादित किया जा रहा है, तो यह तर्क देगा कि पहला आदम भी वाचा का मध्यस्थ है। ठीक है, वाचा के मानवशास्त्र के बारे में क्या? उत्पत्ति 1 हमें मानव स्वभाव के बारे में क्या बताता है? खैर, उत्पत्ति 1.26 कहता है, आइए हम मनुष्य को अपनी छवि में, अपनी समानता में बनाएँ। वे शब्द, छवि, और समानता, आप जानते हैं, हम मानते हैं कि प्रभु ने लोगों को संवाद करने के लिए मूसा के माध्यम से यह सामग्री दी ताकि लोग इसे समझ सकें।

खैर, हिब्रू में ये शब्द, त्सेलेम और डेमुथ, दोनों का मतलब लगभग एक ही है। और उनका मतलब औपचारिक रूपरेखा है। इन दोनों का इस्तेमाल मूर्तियों के लिए किया जाता है, जो जाहिर तौर पर मूल के समान होती हैं।

प्राचीन निकट पूर्व में राजा, प्राचीन निकट पूर्व में भी यही शब्द दिखाई देते हैं। राजा खुद की बनाई गई मूर्तियों, छवियों या समानताओं के बारे में बात करते हैं। और इसलिए मूसा के दिनों में या उसके बाद प्राचीन दुनिया में कोई व्यक्ति जो उत्पत्ति 1.26 पढ़ता है, वह स्वाभाविक रूप से सोचेगा, ठीक है, कि भगवान कह रहे हैं कि वह मनुष्यों को उसी रूप में बनाने जा रहे हैं जैसा वह है।

उत्पत्ति 5:1 से 3 तक इन बातों के समानांतर है क्योंकि यह इस बारे में बात करना शुरू करता है कि कैसे परमेश्वर ने आदम को अपनी छवि और समानता में बनाया। और फिर आप पढ़ते हैं कि जब आदम 130 साल का था, तो उसे अपनी ही समानता में, अपनी ही छवि में, उन्हीं शब्दों में एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम शेत रखा। स्पष्ट रूप से, आदम के बेटे का रूप भी वैसा ही था जैसा उसका था।

उसके पास सिर, कंधे, धड़, भुजाएँ, इत्यादि थीं। और इसलिए, जैसा कि हम बाइबल में देखेंगे, इसे थोड़ी देर बाद देखें: जब भी प्रभु किसी शानदार ईश्वरीय दर्शन में प्रकट होते हैं और किसी भी हद तक उनका वर्णन किया जाता है, तो उनका एक मानवीय रूप होता है। और इसमें कोई विरोधाभास नहीं है।

कोई कहेगा, ठीक है, लेकिन परमेश्वर आत्मा है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसका कोई रूप नहीं हो सकता। जी उठे मसीह के पास महिमामय शरीर है, लेकिन वह जीवन देने वाली आत्मा भी है।

वह सर्वव्यापी भी है। इसलिए, ये चीजें स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी नहीं हैं, हालाँकि सतही तौर पर, ऐसा लग सकता है। लेकिन हम उन सभी का पता लगाएंगे।

फिर, जब परमेश्वर ने वास्तव में पुरुष और स्त्री की रचना की, तो उसके बारे में क्या कहा? यह हमारे लिए हिब्रू कविता में स्थापित है। यह बाइबल में पहली हिब्रू कविता है। और संयोग से, कभी-कभी आप टिप्पणीकारों या बाइबल अध्ययन लेखकों को उत्पत्ति 1 के बारे में कविता के रूप में बात करते हुए पढ़ते हैं।

यह बात केवल बहुत ही लाक्षणिक अर्थ में सच है। हिब्रू कविता एक बहुत ही खास चीज है। यह एक शैली है।

इसके कुछ नियम हैं। यहाँ पहला उदाहरण दिया गया है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि सूर्यास्त का दृश्य काव्यात्मक होता है।

खैर, आप कह सकते हैं कि उत्पत्ति 1 इस अर्थ में काव्यात्मक है। यह स्पष्ट रूप से उच्च गद्य है। इसकी संरचना शानदार है।

लेकिन यह तकनीकी अर्थ में कविता नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि यह कविता हमें कुछ दिखाने के लिए बनाई गई है। इसलिए, अगर हम यहाँ केवल अंग्रेजी में दिए गए आरेख को देखें, तो अनुवाद में, भगवान ने आदम को बनाया, जो धरती का प्राणी है।

आदम का मतलब है धरती या मिट्टी। उसने आदम को अपनी छवि में बनाया। परमेश्वर की छवि में, उसने उसे बनाया।

नर और मादा, उसने उन्हें बनाया। A, B और C का मतलब समानांतर तत्वों को दिखाना है। इसलिए, भगवान ने बनाया।

दूसरी पंक्ति में, उसने सृष्टि की। तीसरी पंक्ति में, उसने सृष्टि की। ईश्वर ने क्या बनाया? प्रत्यक्ष वस्तु आदम, मनुष्य है।

दूसरी पंक्ति में, भगवान ने उसे बनाया। तीसरी पंक्ति में, भगवान ने उन्हें बनाया। खैर, अब C तत्व बचता है।

मैं प्राइम्स का उपयोग यह दिखाने के लिए करता हूँ कि ये समानांतर तत्व हैं, लेकिन ये बिल्कुल एक जैसे शब्द नहीं हैं। यह हिब्रू कविता को आरेखित करने में एक परंपरा मात्र है। तीसरी पंक्ति, उसने उन्हें बनाया।

हमने इसका ध्यान रखा है। खैर, नर और मादा के बारे में क्या? अगर तीसरी पंक्ति में अन्य C के समानांतर C तत्व होने जा रहा है, तो यह नर और मादा होने जा रहा है। और मुझे लगता है कि हमें यह समझने के लिए आमंत्रित किया जाता है कि यह मामला है।

तो, मेरा मानना है कि यह कविता हमें यह बताने के लिए बनाई गई है कि भगवान ने पुरुष और महिला को अपनी छवि में, भगवान की छवि में बनाया है। तो, पुरुष और महिला दोनों भगवान की छवि में बनाए गए हैं। खैर, इसका क्या मतलब है? पुरुष और महिला दोनों ही छवि दिखाते हैं।

कहने का मतलब यह है कि हम जिन शब्दों के बारे में बात कर रहे थे, उनका क्या मतलब है? मूल रूप से, वे रूपरेखा दिखाते हैं। अब, संभवतः वहाँ बहुत सी अन्य बातें भी निहित होंगी। निश्चित रूप से, संवाद करने की, समझने की क्षमता, जैसा कि ईश्वर करता है, क्योंकि वह उन्हें चीजें बताता है और वे उन्हें समझते हैं।

जैसा वह शासन करता है, वैसा ही शासन करने की क्षमता। अगर आप चाहें तो वे पृथ्वी पर जागीरदार के रूप में शासन करने जा रहे हैं। जागीरदार राजा और रानी।

हालाँकि, यहाँ पुरुष और महिला की भूमिकाओं के बीच किसी भी तरह के अंतर पर बात नहीं की गई है। न ही इसका कोई निहितार्थ है। इसलिए इसे समझना महत्वपूर्ण है।

यह कविता हमें बहुत सी जानकारी देती है, लेकिन बहुत कुछ ऐसा भी है जो यह हमें नहीं बताती। यह हमें उनकी भूमिकाओं के बारे में नहीं बताती। आपको अगली आयत में, उत्पत्ति 1.28 में भूमिका संबंधी मुद्दों को संबोधित किया गया है, जब परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद देता है और उनसे कहता है, फलदायी बनो और संख्या में बढ़ो, पृथ्वी को भर दो और उस पर अधिकार करो, मछलियों पर शासन करो, इत्यादि।

अब, क्या वहाँ भूमिका के अंतर को संबोधित किया गया है? अच्छा, एक छोटे से तरीके से। कोई इसे बहुत छोटा नहीं मान सकता। वे फलदायी होने जा रहे हैं।

और हमारा मानना है कि मानव जीव विज्ञान इतना नहीं बदला है कि हम इसे समझ न सकें। बच्चे को जन्म देने और उसे पालने में नर और मादा की भूमिकाओं में अंतर होता है। इसलिए, हम जानते हैं कि इसमें कुछ भूमिका भिन्नता है।

लेकिन इससे हमें बस इतना ही पता चलता है। संभवतः, गर्भावस्था के अधिक उन्नत चरणों में, महिला पृथ्वी को वश में करने के मामले में कुछ चीजें करने में सक्षम नहीं रही होगी जो वह पहले कर रही थी। लेकिन हम इसके बारे में अटकलें नहीं लगा सकते।

लेकिन मुझे लगता है कि शुरुआती दौर में, इन शुरुआती अध्यायों में, साक्ष्य की सीमाओं के बारे में खुद के साथ बहुत सख्त होना महत्वपूर्ण है। बहुत से लोग समानता को इस समतावादी दृष्टिकोण से देखना चाहते हैं। इन शुरुआती अध्यायों में अन्य चीजें हैं जिन्हें लोग विवाह में पदानुक्रमिक संबंध या पूरक दृष्टिकोण के रूप में देखना चाहते हैं।

और मैं तर्क दूंगा कि इन सभी प्रारंभिक सामग्रियों में, आपको बहुत अधिक अस्पष्टता, बहुत अधिक अनिश्चितता मिलेगी। और इसलिए, मुझे लगता है कि इस तरह के सवालों के जवाब नए नियम में हैं, जहाँ आपको सभी प्रकार की चीजों पर ईश्वर के रहस्योद्घाटन की पूरी अभिव्यक्ति मिलती है। और, ज़ाहिर है, विद्वान इन मुद्दों पर भी असहमत हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि बौद्धिक ईमानदारी और निष्ठा के लिए यहाँ खुद के साथ सख्त होना ज़रूरी है। मैं कभी-कभी गॉर्डन कॉनवेल का उदाहरण देता हूँ, जहाँ मैं पढ़ाता हूँ, और कहता हूँ, मान लीजिए कि आपको बताया जाता है कि गॉर्डन कॉनवेल के ट्रस्टियों ने हेडन रॉबिन्सन और एलन मैथ्यूज, एलिस मैथ्यूज को बताया है कि उन्होंने हेडन और एलिस को गॉर्डन कॉनवेल का प्रशासन चलाने का आदेश दिया है। हेडन रॉबिन्सन कुछ समय के लिए गॉर्डन कॉनवेल के अध्यक्ष थे।

और एलिस मैथ्यूज उनकी डीन थीं। लेकिन मान लीजिए कि आपको यह नहीं बताया गया। ठीक है, अगर आपको केवल यह बताया जाए कि ट्रस्टियों ने उन्हें गॉर्डन कॉनवेल का प्रशासन करने, गॉर्डन कॉनवेल पर शासन करने का जनादेश दिया था, अगर आप चाहें, तो उत्पत्ति 1:28 के संदर्भ में, क्या आप जानते हैं कि उनकी भूमिकाओं में कोई अंतर है? और जवाब, मुझे लगता है, निश्चित रूप से, आपको नहीं पता होगा।

उस मामले में ज़्यादा जानकारी होने पर, हम जानते हैं कि एक अध्यक्ष था और दूसरा डीन था। तो, एक के पास उच्च पद था, और इसी तरह। लेकिन उत्पत्ति 128, हमें बस इतना ही बताती है।

और मुझे लगता है कि हमें इस बारे में ईमानदार होना चाहिए। ठीक है। उत्पत्ति 128 से यह स्पष्ट है कि शाही कार्य दोनों को सौंपा गया है।

वे दोनों ही शासन करने जा रहे हैं। सांस्कृतिक कार्य दोनों को सौंपा गया है। वे पृथ्वी को अपने अधीन करने जा रहे हैं और इसी तरह।

जैसा कि हमने अभी कहा, पिता और माता के मामले को छोड़कर भूमिका विभेदन का उल्लेख नहीं किया गया है। यह लंबे समय से सोचा और समझा जाता रहा है, और मुझे लगता है कि यह सही है, कि उत्पत्ति 2 में, जैसा कि हमने कहा, वाचा संबंध के संदर्भ में उत्पत्ति 1 में हमने जो सीखा था, उसका विस्तार करता है, यहोवा परमेश्वर ने आदम, धरती के बच्चे को लिया, उसे काम करने और उसकी सेवा करने और काम करने या उसकी सेवा करने और उसे बनाए रखने के लिए अदन के बगीचे में लगाया। क्रिया कार्य, अवद, बिंदु ए, तम्बू में लेविटिकल सेवा के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसा कि क्रिया शमर, बिंदु बी है। इसलिए पुजारी कार्य के निहितार्थ को समझा गया है।

बेशक, इससे यह विचार भी निकलेगा कि ईडन पहला मंदिर था। और मुझे लगता है कि इसके लिए सबूत मौजूद हैं, जिन पर हम गौर करेंगे। इस बिंदु पर, हम मंदिर को एक इमारत के रूप में देखते हैं।

लेकिन प्राचीन दुनिया में मंदिर का मतलब सिर्फ एक ऐसी जगह होता था जहाँ भगवान रहते थे। सुमेरियन में इसका पुराना रूप शाब्दिक रूप से एक बड़ा घर है। और मंदिर के लिए हिब्रू शब्द बस इसका एक लिप्यंतरण है।

इसलिए हिब्रू भाषा के विद्यार्थी सीखेंगे कि शब्द हेकल का मतलब महल या मंदिर हो सकता है। तो, राजा तो राजा है, उसके पास महल है, हेकल है, उसके पास बड़ा घर है। भगवान तो भगवान है; उसके पास भी बड़ा घर है, मंदिर भी है।

लेकिन मुद्दा यह है कि प्राचीन दुनिया में मंदिर एक निवास स्थान था। इसलिए निवासस्थान वास्तव में मंदिर हो सकता है। इसलिए हमें मंदिर कहा जा सकता है।

हम पत्थर के ब्लॉक और बीम वगैरह से नहीं बने हैं, बल्कि हम एक निवास स्थान हैं। हम एक ऐसी जगह हैं जहाँ परमेश्वर, पवित्र आत्मा, निवास करते हैं। तो, संकेत तो यही होंगे कि बगीचे में उनकी पुरोहिती भूमिका या पुरोहिती भूमिकाएँ थीं, जो भी रही होंगी।

हमें वास्तव में यह नहीं बताया गया है कि इसे कैसे काम में लाया जाए और इसे कैसे रखा जाए। और इसका मतलब यह होगा कि यह एक ऐसी जगह थी जहाँ भगवान भी रहते थे, जहाँ वे रहते थे। मैंने एक बार एक पोस्टर देखा था जिसमें कहा गया था कि भगवान की मूल योजना दो नग्न शाकाहारियों के साथ एक बगीचे में रहना था।

मुझे नहीं पता कि यह कैसा दिखता होगा, लेकिन संकेत हैं कि भगवान वहाँ रहते थे, जरूरी नहीं कि वे हमेशा वहाँ दिखाई देते हों। एक और भूमिका भविष्यवाणी की है। वे भगवान से सुनते हैं।

यह स्पष्ट रूप से एक भविष्यवाणी वाली बात है। आदम, जैसा कि हमने तर्क दिया है, एक वाचा मध्यस्थ है। अगर कोई आदमिक वाचा है, तो आदम उसका मध्यस्थ है।

और एक मध्यस्थ के रूप में, वह अपनी सभी संतानों के लिए उस वाचा का मध्यस्थ है, दुर्भाग्य से, इसके सभी निहितार्थों के साथ। इसलिए पॉल कह सकता है कि आदम में, सभी मर जाते हैं। लेकिन फिर दूसरे आदम में, सभी को जीवित कर दिया जाएगा।

और हमारे दैनिक जीवन के संदर्भ में भी, निहितार्थ इतने महान नहीं हैं। जैसे पाप एक मनुष्य के द्वारा संसार में आया और पाप के द्वारा मृत्यु, और इस तरह, मृत्यु सभी लोगों में आई क्योंकि सभी ने पाप किया, और इसी तरह। और हम इस बारे में बाद में और बात कर सकते हैं जब हम नई वाचा के बारे में बात करते हैं, आदम के समय से लेकर मूसा के समय तक मृत्यु का शासन, और इसी तरह।

लेकिन पाप दुनिया में वाचा के मध्यस्थ के पाप के कारण है, शायद। और फिर, जैसा कि हमने संक्षेप में बात की है, हम दूसरे आदम के समानांतर चर्चा करेंगे। पहला मनुष्य, आदम, एक जीवित प्राणी बन गया।

अंतिम आदम, एक जीवन देने वाली आत्मा है। खैर, अगर अंतिम आदम एक वाचा मध्यस्थ था, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा अगर पहला आदम उससे पहले एक वाचा मध्यस्थ था। इमागो देई का नैतिक या नैतिक पहलू भी है।

और हमारे पास वे शर्तें हैं जिनके बारे में हमने बात की है, और वाचा तोड़ने के बारे में भी जिसके बारे में हमने बात की है। और इसलिए, यहाँ मुद्दा यह है कि पतन से पहले परमेश्वर की छवि में बने, आदमी और उसकी पत्नी नैतिक रूप से परिपूर्ण प्राणी थे। वे पाप रहित थे।

16वीं और 1700 के दशक के एक प्यूरिटन लेखक ने इस संरचना का निर्माण किया, जो मुझे लगता है कि बहुत उपयोगी है। पतन से पहले मनुष्य पाप करने में सक्षम था। हाँ, वह पाप कर सकता था, और हम जानते हैं कि वह ऐसा कर सकता था क्योंकि उसने पाप किया था।

लेकिन वह पाप न करने में भी सक्षम था, जिसे दुर्भाग्यवश उसने जारी नहीं रखा। पतन के बाद का मनुष्य निश्चित रूप से पाप करने में सक्षम था। पाप न करने में असमर्थ, और मैं इसके बारे में एक प्रश्न उठाता हूँ, जिस पर हम थोड़ी देर में विचार करेंगे।

मुझे लगता है कि थॉमस बोस्टन का इरादा यह कहना था कि आप जीवन जी सकते हैं और कुछ तरीकों से पाप नहीं कर सकते, लेकिन आप पाप किए बिना जीवन नहीं जी सकते। मुझे लगता है कि उनका यही मतलब था क्योंकि स्पष्ट रूप से, हालांकि, हम हर समय जीने और पाप न करने

में सक्षम हैं, निश्चित रूप से, विशेष रूप से पवित्र आत्मा के साथ। लेकिन वैसे भी, पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति पाप करने में सक्षम है, पाप न करने में सक्षम है, और हम सभी यह जानते हैं।

महिमावान मनुष्य, जिसकी हम आशा करते हैं जब हम उसे देखेंगे, हम उसके जैसे होंगे। हम पाप नहीं कर पाएँगे, और हम, जाहिर तौर पर, पाप करने में असमर्थ होंगे। खैर, पाप न करने में असमर्थ होने के बारे में क्या? मैं इनफिनिटिक्स को विभाजित नहीं करना चाहूँगा जैसा कि उसने किया था, लेकिन रोमियों 7 में, आपके पास व्यवस्था के अधीन मनुष्य है, और हम उस पर विचार करेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि वास्तव में वहाँ यही हो रहा है।

पौलुस खुद को मसीही नहीं बता रहा है। वह बता रहा है कि आत्मा के बिना व्यवस्था के अधीन रहना कैसा होता है, और वह यह बात अच्छी तरह जानता था। लेकिन उत्पत्ति 4:24 में हम पढ़ते हैं कि हनोक परमेश्वर के साथ चलता था, और वह नहीं था, क्योंकि परमेश्वर ने उसे ले लिया था।

खैर, परमेश्वर के साथ चलना एक बहुत शक्तिशाली कथन है। उसमें कुछ अच्छाई अवश्य रही होगी। कुछ समय ऐसे भी रहे होंगे जब वह पाप नहीं कर रहा था।

उत्पत्ति 7 में, प्रभु नूह से कहते हैं, तुम और तुम्हारा पूरा परिवार जहाज़ में आ जाओ। मैंने देखा है कि इस पीढ़ी में तुम मेरे सामने धर्मी हो। तो फिर, नूह धर्मी था।

ऐसा नहीं है कि वह पाप रहित था, लेकिन उसे धर्मी होना था। यह एक अलग विषय है, लेकिन मैं यहाँ इसका एक छोटा सा स्केच दूँगा। धार्मिकता, धार्मिकता की मूल परिभाषा, एक मानक के अनुरूप होना है। बाइबिल के अनुसार, एकमात्र मानक जो मायने रखता है वह है ईश्वर, और इसलिए यदि कोई व्यक्ति पुराने नियम या नए नियम में धर्मी है, तो वह व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व के मानक के अनुरूप है और वह जो भी कर सकता है, वह कर रहा है, चाहे वह किसी भी वाचा और रहस्योद्घाटन की डिग्री के तहत रह रहा हो।

यीशु मसीह ने इसे पूरी तरह से किया। इसीलिए उसे यीशु मसीह धर्मी कहा गया है। और इसलिए जब नूह धर्मी है, तो उसे धर्मी कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि कुछ हद तक वह वैसा ही था जैसा परमेश्वर चाहता है कि कोई व्यक्ति हो।

पूरी तरह से नहीं, लेकिन इसलिए कि उसमें परमेश्वर के कुछ गुण होंगे। उसमें कुछ अच्छाई होगी; उसमें कुछ बुद्धि होगी; उसमें कुछ प्रेम होगा; उसमें धैर्य होगा और इसी तरह, वफ़ादारी होगी, और इसी तरह। तो, इसका सार यह है कि पतन के बाद लेकिन मसीह से पहले के लोगों में कुछ अच्छाई हो सकती थी, उनमें कुछ धार्मिकता हो सकती थी, जिसका मतलब था कि तब मुझे लगता है कि जिस तरह से वे रहते थे, वे हमेशा हर समय पाप नहीं करते थे।

हमें याद होगा कि यीशु ने कहा था, आप जानते हैं, कि पिता अपने बेटे को धर्मी और अधर्मी दोनों पर चमकने देता है और उसकी बारिश अच्छे और बुरे दोनों पर बरसती है। तो, वहाँ धर्मी और अच्छे लोग थे। रोमियों 5 में पॉल कहते हैं कि, आप जानते हैं, एक धर्मी व्यक्ति के लिए मरना कठिन होगा, लेकिन मुझे लगता है कि एक अच्छे व्यक्ति के लिए, कोई मरने की हिम्मत भी कर सकता है।

संभवतः, वह सामान्य अनुग्रह के अधीन लोगों के बारे में बात कर रहा है। तो, बेशक, वह इसके बाद कहता है, लेकिन आप जानते हैं, मसीह ने हमारे लिए यह किया। वह हमारे और अधर्मियों के लिए मरा।

तो, वहाँ अच्छे लोग हैं, और इसका मतलब यह होना चाहिए कि वे हर समय पाप नहीं कर रहे थे। अगर हम यहाँ आदमिक वाचा के बड़े दृष्टिकोण पर वापस जाएँ, तो अलग-अलग तरीके हैं, आदमिक वाचा को संरचनात्मक रूप से देखने के अलग-अलग तरीके हैं। हमने तर्क दिया है कि इसमें दूसरी सहस्राब्दी संधि के तत्व हैं।

मेरे पुराने गुरु मेरेडिथ क्लेन ने फ्रेमवर्क परिकल्पना का निर्माण किया, और मुझे लगता है कि यह उत्पत्ति 1 में जो कुछ हो रहा है उसे दूसरे तरीके से देखने का एक बहुत अच्छा तरीका है। और यह ऑगस्टीन से जुड़ा है। ऑगस्टीन ने दिनों के इस संतुलन को महसूस किया।

19वीं सदी के अंत में आलोचनात्मक विद्वान एसआर ड्राइवर ने इसे देखा और रूप और पूर्णता के दिनों के संदर्भ में इसके बारे में बात की। लेकिन मुझे लगता है कि क्लेन ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अधिक गहराई से अध्ययन किया और देखा कि यहाँ अधिकार के मुद्दे हैं। और इसलिए उन्होंने पहले तीन दिनों को सृजित डोमेन के रूप में और अगले तीन दिनों को ऐसे दिनों के रूप में बताया जिसमें प्राणी राजा, वे चीजें जो उन डोमेन पर शासन करेंगी, बनाई गईं।

और यह मनमाना नहीं है। हम चौथे दिन के बारे में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने दिन पर शासन करने के लिए बड़ी ज्योति और रात पर शासन करने के लिए छोटी ज्योति बनाई। और, ज़ाहिर है, पृथ्वी पर शासन करने के लिए पुरुष और स्त्री को बनाया।

और कोई समुद्री जीवों और पक्षियों के लिए भी यही बात लागू कर सकता है या आरोपित कर सकता है। हम आज भी यह कहावत इस्तेमाल कर सकते हैं कि पक्षी हवा पर राज करते हैं। तो इसमें अधिकार शामिल है।

और फिर सब्बाथ का दिन है। संयोग से, इस मार्ग में अधिकार के अन्य संकेत हैं, और यह कुछ समय पहले प्राचीन निकट पूर्व के यहूदी विद्वान, अम्बर्टो कैसुटो ने अपनी पुस्तक, *बाइबिल और ओरिएंटल स्टडीज में उल्लेख किया था*, कि उत्पत्ति 1 और वास्तव में, बाइबिल में बहुत सारी आज्ञाएँ पूरी हो रही हैं। लेकिन आज्ञाओं की पूर्ति का पैटर्न इस तरह से है, और यह प्राचीन निकट पूर्वी शिलालेखों में भी पाया जाता है।

तीसरी सहस्राब्दी और दूसरी सहस्राब्दी में। मत्ती 8 में यीशु की सेवकाई में, जब सूबेदार उसके पास आता है, तो वह चाहता है कि उसका सेवक चंगा हो जाए। और यीशु उसे चंगा करने के लिए जाने को तैयार है।

लेकिन सूबेदार ने कहा, नहीं, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए, लेकिन केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा क्योंकि मैं अधिकारी के अधीन मनुष्य हूँ, और मेरे अधीन

लोग हैं। मैं इस से कहता हूँ, जा, और वह जाता है, आज्ञा पूरी होने दो। इस से कहता हूँ, आ, और वह आता है, आज्ञा पूरी होने दो।

इस व्यक्ति को, यह करो, और वह इसे पूरा करता है, आज्ञा पूर्ति। इस पैटर्न का कारण या यह जो दिखाने का मतलब है वह यह है कि आज्ञा देने वाले का अधिकार ऐसा है कि उस व्यक्ति की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया जाना चाहिए और जैसा कहा गया था, उसे पूरा किया जाना चाहिए। और इसलिए उत्पत्ति 1 इस बात से भरा हुआ है।

और इसलिए, इस अनुच्छेद के ढांचे के चित्रण के साथ जो हम देखते हैं, उसके अलावा, हमारे पास यह संकेत है कि बहुत अधिक अधिकार चल रहा है। यह बिल्कुल सही समझ में आता है अगर हम मानते हैं कि यह सब परमेश्वर के बारे में है, और वह सभी अधिकारों का स्रोत है। इसलिए दिव्य अधिकार, सभी अधिकार, परमेश्वर में रहते हैं क्योंकि वह निर्माता है।

वह मनुष्यों को भी वह अधिकार प्रदान करता है। इसलिए मानवीय अधिकार ईश्वर से आता है और ईश्वर की छवि में बनाए जाने का हिस्सा है। और फिर यह व्यक्तिगत अधिकार का मामला है, और हम इसे बाद में नए नियम में देखते हैं जब जॉन कहते हैं, जॉन द बैपटिस्ट, जब उसके शिष्य शिकायत करते हैं, अरे, देखो, हर कोई, वे अब तुम्हारे पास नहीं आ रहे हैं, वे यीशु के पास जा रहे हैं।

और यूहन्ना कहता है, ठीक है, एक व्यक्ति केवल वही प्राप्त कर सकता है जो उसे स्वर्ग से दिया गया है। रोमियों 13 में पौलुस कहता है, हर किसी को शासक अधिकारियों के अधीन होना चाहिए क्योंकि कोई अधिकार नहीं है सिवाय उस अधिकार के जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया है। और हम इसके बारे में और बात करेंगे, लेकिन यह एक स्पष्ट रूप से व्यक्त बाइबिल सिद्धांत है, अधिकार की यह बात परमेश्वर से आती है।

खैर, दिन जो भी हों, बेशक सवाल यह है कि ये दिन क्या हैं? क्या ये 24 घंटे के दिन हैं या क्या? एक लंबे समय से चला आ रहा सवाल। जो भी हों, वे निश्चित रूप से फ्रेमवर्क परिकल्पना द्वारा भी सृष्टि की प्रगति को आदेश देते हैं, वे इसे एक संरचना देते हैं। और इस तरह के क्रम की उपस्थिति एक प्राधिकरण को दर्शाती है या व्यक्त करती है जिसने क्रम का निर्माण किया।

अधिकार नई सृष्टि के लिए भी मौलिक है। यूहन्ना हमें बताता है कि जिन लोगों ने उसे ग्रहण किया, उन सभी को, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया। जैसा कि हम देखेंगे, यूहन्ना और रोमियों 13 में यूनानी में यह शब्द एक ही शब्द है, और इसलिए इसका सही अनुवाद उसी तरह किया गया है।

ठीक है, लेकिन फिर दिन की व्याख्याओं के बारे में क्या? आप उत्पत्ति 1 के बारे में बात नहीं कर सकते और उसके बारे में बात नहीं कर सकते। खैर, शाब्दिक 24 घंटे का दिन निश्चित रूप से पाठ को उसके अंकित मूल्य पर लेता है। कील और डेलिट्ज़ दो जर्मन विद्वान हैं, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में उच्च आलोचना का उदय देखा, जो मूल रूप से पुराने नियम को नष्ट कर रहा था, यह

विश्वास नहीं कर रहा था कि भगवान ने ऐसा कुछ किया था, यहाँ तक कि सवाल भी उठा रहा था कि क्या कभी मूसा था, इत्यादि।

उन्होंने कहा, देखिए, हमें पूरे पुराने नियम पर एक टिप्पणी तैयार करने की आवश्यकता है जो इस पर विश्वास करे और इसे गंभीरता से ले, और उन्होंने ऐसा ही किया। खैर, दिनों के बारे में क्या? उनका प्रस्ताव था कि जैसे-जैसे नई बनी पृथ्वी अधिक तेज़ी से घूमने लगी, दिन छोटे होते गए, जो एक बहुत ही अजीब प्रस्ताव की तरह लग सकता है, लेकिन यह एक ऐसा प्रस्ताव है जो वहाँ मौजूद है। पृथ्वी के अपने अक्ष पर पहले चक्कर में लगा समय वास्तव में हमारे घंटे के गिलास से नहीं मापा जा सकता है, लेकिन भले ही वे पहले धीमे थे और हमारे सौर मंडल के पूरा होने तक अपने वर्तमान वेग को प्राप्त नहीं किया था, इससे पहले तीन दिनों और अंतिम तीन दिनों के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं होगा, जो सूर्य के उदय और अस्त होने से विनियमित थे।

यह वास्तव में एन्ट्रॉपी के साथ असंगत है। हम जानते हैं कि चीजें ऊर्जा खो देती हैं और धीमी हो जाती हैं, और इसलिए ब्रह्मांड भी धीमी गति से फैल रहा है, यह पता लगाने योग्य है, लेकिन वैसे भी, यह उनका प्रस्ताव था। और फिर, ठीक है, लेकिन चौथे दिन सूर्य के निर्माण के बारे में क्या? खैर, पहले तीन दिन नहीं थे। पहले तीन दिनों का प्रकाश सूर्य द्वारा नहीं बनाया गया था, जिसे अभी तक बनाया नहीं गया था, लेकिन वे अभी भी भगवान द्वारा बनाए गए प्रकाश के कारण दिन थे।

तो, कोई ऐसा क्यों करेगा? खैर, मुझे लगता है, जैसा कि हम दिनों के अन्य दृष्टिकोणों के साथ देखेंगे, इनमें से कुछ प्रस्ताव इसलिए उठे क्योंकि भूविज्ञान पृथ्वी के लिए बहुत पुरानी उम्र का संकेत दे रहा था, उत्पत्ति 1 में दिनों की कुछ व्याख्या प्रस्तुत की जानी थी जो उन्हें भूविज्ञान द्वारा बताए गए अनुसार सुसंगत बनाती। यदि हम इसी दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो हम जर्मन विद्वान गेरहार्ड वॉन राड को देखते हैं, जो इसे काफी हद तक शाब्दिक रूप से लेते हैं। उनका कहना है कि यहाँ जो कहा गया है उसका उद्देश्य पूरी तरह से और बिल्कुल वैसा ही सत्य होना है जैसा कि यह है।

कहीं भी पाठ में केवल मायावी, प्रतीकात्मक या आलंकारिक रूप से काव्यात्मकता नहीं है। हालाँकि, वॉन रेड का मानना नहीं था कि छठे दिन कोई वास्तविक सृष्टि थी। बल्कि, उन्होंने सोचा कि पाठ हमें यही बता रहा है।

और यह वह तरीका है जिस तरह से पुजारी लेखक ने इस पाठ को लिखा, न कि मूसा ने, पुजारी लेखक ने जो 570 ईसा पूर्व के आसपास लिखा था, उसने इसे इस तरह से देखा, जिस तरह से वह इसे चित्रित करना चाहता था। और हम इस पाठ्यक्रम में उच्च आलोचना में नहीं जा सकते। यह एक अलग विषय है।

लेकिन यह वही दृष्टिकोण था। एसआर ड्राइवर ने तर्क दिया कि यह अंश भी प्रीस्टली लेखक द्वारा लिखा गया था। और इसलिए व्यक्तिगत 24 घंटे की बात पर एक और दृष्टिकोण जीएच पेम्बर द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जो एक उदार विद्वान नहीं थे, लेकिन उन्होंने इसे अंतराल सिद्धांत के संबंध में प्रस्तुत किया, जिसे हम थोड़ी देर में देखेंगे।

उनके बाद स्कोफील्ड ने बाइबल और हैरी रिमर का हवाला दिया। और आज भी लोग, बेशक, 24 घंटे की व्याख्या की पुष्टि करते हैं। एक अन्य व्याख्या दिन-युग या दिन युग व्याख्या है, जो अक्सर भजन 90 से अपील करती है।

आपकी नज़र में हजार साल सिर्फ़ कल की बात है या रात के एक पहर की बात है। और यह दृष्टिकोण, जैसा कि हम यहाँ देखने जा रहे हैं, बाइबिल के विवरण को भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड के साथ जोड़ने का प्रयास करता है, जैसा कि हमने कहा। और आपके पास इसके कुछ प्रतिपादक हैं।

ड्राइवर भी इन बातों को थोड़ा सा अलंकारिक रूप से लेने को तैयार थे, जैसा कि उन्होंने 1886 में लिखा था। लेकिन वे इस दृष्टिकोण से हटकर इस दृष्टिकोण पर आ गए कि यह पुजारी लेखक है, और यह 24 घंटे का दिन है। लेकिन एक बिंदु पर, उन्होंने कहा, शाम और सुबह के बावजूद, जो शाब्दिक दिनों को इंगित करता प्रतीत होता है, यह अनुमान कि कथाकार का मतलब अवधियों के एक आलंकारिक प्रतिनिधित्व के रूप में अपने दिन से था, जैसा कि वर्तमान लेखक सोचने का साहस करता है, अस्वीकार्य नहीं माना जाना चाहिए।

जैसा कि हम इस लेख में जानेंगे, आपको पता चल जाएगा कि यह सिर्फ़ एक सिंहावलोकन है। यह इन दिनों के विभिन्न मुख्य दृष्टिकोणों का एक रेखाचित्र है। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसका समाधान हम यहाँ करने जा रहे हैं।

हालाँकि मैं कहूँगा कि मुझे लगता है कि क्लेन का इसे संभालने का तरीका सबसे अच्छा है। लेकिन हम इस बारे में कुछ मिनटों में बात कर सकते हैं। दूसरा दृष्टिकोण ईश्वर के दिन हैं जिनका कोई मानवीय सादृश्य नहीं है।

ऑगस्टीन ने इस मूल को ऑगस्टीन से थोड़ा पहले ही प्रस्तावित किया था, वास्तव में, अपनी पुस्तक में जो कि मुख्य चीज़ों, पहली चीज़ों के बारे में है। तो यह वही है जो यह है। यदि वे बिना किसी मानवीय सादृश्य के ईश्वर के दिन हैं, तो हम समझ नहीं सकते कि वे कितने लंबे रहे होंगे।

एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि उत्पत्ति 1 में दिन चित्रात्मक दिन हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, दिनों के बारे में सूचनाएँ क्रमिक दिनों को इंगित करती हैं जिन पर परमेश्वर ने आदम को बताया कि उसने दुनिया कैसे बनाई थी। उसने या तो दर्शन के द्वारा या मौखिक संचार के द्वारा ऐसा किया।

कुछ लोगों ने इस दृष्टिकोण को चुना है। यह 24 घंटे के दिन की समस्या से बचने का एक सुविधाजनक तरीका है जो भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड के साथ टकराव में प्रतीत होता है। लेकिन इस विवरण में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव दे कि इसका उपयोग किया जा रहा है, कि दिन और रात की अभिव्यक्तियों का उपयोग इस तरह से किया जा रहा है।

इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह बताता हो कि भगवान ने आदम को अलग-अलग दिनों में ये बातें बताई थीं। लेकिन यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण हो सकता है कि कैसे विद्वान किसी पाठ में अपनी इच्छानुसार कुछ भी डाल सकते हैं, अगर उन्हें लगता है कि इससे कोई समस्या

हल हो सकती है। लेकिन आपको सख्त होना चाहिए और सबूतों के साथ बने रहना चाहिए, भले ही सबूतों के साथ बने रहने का मतलब यह हो कि आपके पास निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं, जिसके बारे में आप सुनिश्चित हो सकें।

खैर, यहाँ एक और दृष्टिकोण यह है कि इस दिन का यह कार्य एक साहित्यिक उपकरण है जो मात्र एक सप्ताह में सृष्टि का चित्रण करके परमेश्वर की शक्ति और संप्रभुता को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करता है। तो, आप जानते हैं, परमेश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह इसे छह दिनों में कर सकता था। हम यह नहीं कह रहे हैं कि उसने ऐसा किया।

खैर, इस आपत्ति के बारे में क्या कि इस शब्द का अर्थ शाब्दिक दिन लगता है? और किडनर का तर्क है कि, यह एक प्रेरित प्रयोग है, इसलिए इसका मतलब उससे कहीं ज़्यादा है जो कहा गया था। खैर, इस आपत्ति के बारे में क्या कि भगवान इस तरह झूठ बोल रहे हैं? नहीं, वह झूठ नहीं बोल रहे हैं। वह हमसे उस स्तर पर संवाद कर रहे हैं जिसे हम समझ सकते हैं।

मुझे लगता है कि यह थोड़ा समस्याग्रस्त है, लेकिन मुझे लगता है कि इसे संभालने का एक बेहतर तरीका है। गॉर्डन वेनहम ने अपनी जेनेसिस कमेंट्री में, यह शब्दों की बाइबिल संबंधी टिप्पणियों का दो-खंड सेट है। संयोग से, मैं इसकी अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ।

मैं कहूँगा कि यदि आप उत्पत्ति की टिप्पणी खरीदने जा रहे हैं, तो यह अभी भी खरीदने के लिए सबसे अच्छी होगी। लेकिन उनका कहना है कि यह छह-दिवसीय योजना अध्याय में प्रयुक्त कई साधनों में से एक है, जो उस व्यवस्था पर जोर देती है जिसे सृष्टि में बनाया गया था। अन्य उपकरणों में दोहराए जाने वाले फ़ार्मुलों, इनक्लूसियो आदि का उपयोग शामिल है।

खैर, यह तथ्य कि अन्य साहित्यिक उपकरण हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक साहित्यिक उपकरण है, लेकिन यह एक अस्पष्ट व्याख्या है, और इसे उदार और रूढ़िवादी दोनों विद्वानों ने अपनाया है। हमने स्कोफील्ड और अन्य के संबंध में पहले अंतराल सिद्धांत का उल्लेख किया था। और बस इसके बारे में स्पष्ट होने के लिए, अंतराल सिद्धांत छह 24 घंटे के दिनों के साथ समाप्त होता है।

लेकिन यह कहने का तरीका है कि, उत्पत्ति 1-1 में, जब हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, तो बस इतना ही था। उत्पत्ति 1-1 में, यह सब किया गया था, और यह परिपूर्ण था। लेकिन फिर दुनिया लूसिफ़र को सौंप दी गई, जिसने ईडन के खनिज उद्यान में स्थित परमेश्वर की मंदिर पूजा का संचालन किया।

और कहो, ठीक है, दुनिया में उसे यह कहाँ से मिल रहा है? खैर, यहेजकेल 28-13 में, हम टायर के राजकुमार के बारे में कथन पढ़ते हैं, लेकिन यह लंबे समय से सोचा गया है, और मुझे लगता है कि यह सही है, एक उच्च और बुरी शक्ति के लिए एक तरह का आंकड़ा है, शैतान, कहता है, आप ईडन में थे। आप एक करूब थे। आप में पाप पाए जाने से पहले आप परिपूर्ण थे, और आप आग के पत्थरों के बीच चले।

तो यहीं से ईडन का खनिज उद्यान और लूसिफ़र द्वारा पूजा का आयोजन किया गया। खैर, लूसिफ़र की उच्च स्थिति उसके लिए बहुत ज़्यादा थी, और वह गिर गया, और उन पर न्याय पारित किया गया। और आप देखते हैं कि यह जेकेल 28 में इस व्यक्ति पर न्याय पारित किया जा रहा है, लेकिन फिर इसे और भी आगे बढ़ाया गया और कहा गया, ठीक है, यह उस पर और उसके सहयोगियों पर और पृथ्वी पर भी पारित किया गया है।

और इसलिए, पृथ्वी एक तरह से नष्ट हो गई, और इसने एक गड़बड़ कर दी। कुछ लोग तर्क देते हैं कि डायनासोर की बदसूरती और जीवाश्म बिस्तर पाप के लिए एक निर्णय का सबूत हैं, जो पृथ्वी पर पारित किया गया था। खैर, तो, तो लंबे समय के बाद, लगभग 4000 ईसा पूर्व, भगवान ने 624 घंटे के दिनों में पृथ्वी को फिर से तैयार किया।

और इसलिए, इस सिद्धांत के अनुसार, हमारे पास उत्पत्ति 1:1 है, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की, पूर्ण सृष्टि। और फिर आपको एक अंतराल मिलता है। आपको शैतान का विद्रोह और पृथ्वी पर आने वाला न्याय मिलता है, और उसके परिणामस्वरूप, आपको उत्पत्ति 1:2 में लंबे समय तक पृथ्वी निराकार और शून्य दिखाई देती है। और फिर, अंततः, परमेश्वर पृथ्वी को फिर से बनाता है।

यहाँ यशायाह 45 से अपील की गई है, भगवान ने तोहू को नहीं बनाया। और निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि जवाब होगा, ठीक है, हाँ, भगवान ने तोहू में पृथ्वी नहीं बनाई, लेकिन हमें यह नहीं बताया गया है कि उन्होंने ऐसा किया। मुझे लगता है कि हमें बताया गया है कि चीजें एक प्रक्रिया के हिस्से के रूप में निराकार और शून्य थीं।

यह वही है जो यह संकेत दे रहा है, न कि उसने इसे इस तरह बनाया है। लेकिन फिर यह भी दावा है कि पृथ्वी निराकार और शून्य थी, इस कथन का अनुवाद किया जाना चाहिए, पृथ्वी निराकार और शून्य हो गई, लेकिन हिब्रू उपयोग के संदर्भ में ऐसा कोई तरीका नहीं है जो आप अपेक्षित अनुवाद करेंगे। बनने के लिए एक अलग हिब्रू मुहावरा इस्तेमाल किया जाता है, और यह वह नहीं है जो आप उत्पत्ति 1:2 में पाते हैं। इसलिए, इसके प्रतिपादक, और अभी भी ऐसे लोग हैं जो इसे मानते हैं।

ठीक है, ठीक है, यह सिर्फ दिनों की समीक्षा है। अगर हम सृष्टि की गतिशीलता और जो कुछ हो रहा है, उसे देखें, तो मैं यह प्रस्ताव रखूँगा। यह कुछ ऐसा है जो तीन खंडों वाले बाइबिल धर्मशास्त्र को सूचित करता है जिसका मैंने यहाँ उल्लेख किया है।

मैंने इसे बहुत विनम्रता से प्रमुख प्रतिमान कहा है। लेकिन हम इसे कैसे प्राप्त करें? क्योंकि यह एक प्रतिमान है जो स्पष्ट रूप से बताता है, मेरा मानना है, कि बाइबल में परमेश्वर अपनी वाचा की रचना में किस तरह काम करता है। खैर, वह जो बनाता है उसे मैं भविष्यसूचक गतिशीलता कहूँगा।

और इसलिए, उत्पत्ति 1:2 में, हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा मौजूद है। परमेश्वर की आत्मा गहरे सागर के ऊपर मँडरा रही है। यूहन्ना 1 में, हम जानते हैं कि सृष्टि में वचन शामिल है।

तो, सृष्टि में आत्मा और वचन दोनों शामिल हैं। यहीं से हम शुरुआत करते हैं। अगर हम सृष्टि और बपतिस्मा के वृत्तांत को देखें, तो एक दिलचस्प समानता है।

आपके पास पानी के ऊपर मँडराता हुआ परमेश्वर का आत्मा है। आपके पास यीशु के पानी से बाहर आने पर परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरता हुआ है। और इसलिए, क्या ये चीज़ें आपस में जुड़ी हुई हैं? और मुझे याद है कि मैंने सालों पहले इस बारे में सोचा था।

मुझे हमारे एक स्नातक ने, जो किंग्स्टन, जमैका में कैरेबियन ग्रेजुएट स्कूल ऑफ थियोलॉजी के डीन थे, जनवरी में वहाँ जाकर ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने मुझे गर्मियों में फ़ोन किया। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, जब जनवरी में जमैका में निमंत्रण आया, तो पवित्र आत्मा का विश्वास मुझ पर पड़ा, और मैंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

यह बहुत अच्छा समय था। मैं रात में पढ़ाता था। और इसलिए, सुबह में, जब तापमान 80 डिग्री होता था, मैं धूप में लेट जाता था।

और फिर मैं जाकर अपने लेक्चर नोट्स देखता। और मैं उत्पत्ति 1:2 को देख रहा था और सोच रहा था, यहाँ वास्तव में क्या हो रहा है? मेरेडिथ क्लाइन, अपने लेखन में, आत्मा को वाचा के साक्षी के रूप में सोचना पसंद करते हैं। मुझे लगता है कि उत्पत्ति 1:31 एक बेहतर साक्षी प्रदान करता है।

परमेश्वर यह सब देखता है, और वह कहता है कि यह अच्छा है। लेकिन हम जानते हैं कि आत्मा इसमें शामिल है, और यूहन्ना 1 में, वचन इसमें शामिल है। और मैंने सोचा, क्या होगा अगर हम देहधारी वचन की सेवकाई को एक प्रतिमान के रूप में लें और सुझाव दें कि देहधारी होने से पहले वचन के साथ कुछ समानांतर चल रहा था? हम जानते हैं कि सभी चीज़ें उस देहधारी होने से पहले वचन के द्वारा बनाई गई थीं।

और इसलिए, मैं यही लेकर आया हूँ। हम जानते हैं कि देहधारी वचन के माध्यम से, देहधारी वचन में, उस मामले में, आत्मा देहधारी वचन के माध्यम से राज्य के कार्य और सामर्थ्य के शब्द उत्पन्न करने के लिए कार्य करती है। संयोगवश, इसे यीशु की सेवकाई के बारे में भी समझा जाना चाहिए।

यीशु ने जो कुछ भी किया वह आत्मा के द्वारा था। उसने कहा, जो शब्द मैं बोलता हूँ वे वही शब्द हैं जो पिता ने मुझे दिए हैं, और जो शब्द मैं तुमसे बोलता हूँ वे आत्मा हैं, यूहन्ना 6:63। जब उसने दुष्टात्माओं को निकाला, तो वह आत्मा के द्वारा था, और जब उसने चंगा किया, तो हम जानते हैं कि वह आत्मा के द्वारा था क्योंकि चंगा करना आत्मा का उपहार है।

तो, यह बहुत हद तक आत्मा का वचन के माध्यम से कार्य करना है, ताकि हम देहधारी पुत्र के साथ जो कार्य देखते हैं, उन्हें उत्पन्न कर सकें। संयोग से, मुझे लगता है कि शायद मैं आत्मा के बारे में इस बात को इस तरह समझ सकता हूँ कि, अगर मैं इसे इस तरह से रखूँ, त्रिएक परमेश्वर के बारे में बात करते हुए, आप वास्तव में उसके अंदर क्या चल रहा है, इसके बारे में कितना समझ सकते हैं? लेकिन पॉल कहते हैं कि मनुष्य की आत्मा की तरह कोई भी मनुष्य को नहीं

जानता, और ऐसा ही परमेश्वर की आत्मा के साथ भी है। वह परमेश्वर की गहरी बातों की खोज करता है।

मुझे लगता है कि पवित्र आत्मा, एक तरह से, ईश्वर का सबसे अंतरंग रूप है। और इसलिए, यदि आप आत्मा के विरुद्ध पाप करते हैं, तो यह अक्षम्य पाप है जिसके बारे में आपने मार्क 3 में पढ़ा है, क्योंकि वह आत्मा द्वारा राक्षसों को निकाल रहा है, और वे कहते हैं, ठीक है, यह राक्षसों के राजकुमार द्वारा है, और यीशु उन्हें चेतावनी देते हैं। कोई भी पाप है जो एक व्यक्ति करता है, यहाँ तक कि पिता या पुत्र के विरुद्ध ईशनिंदा भी, जो किया जा सकता है, लेकिन आत्मा के विरुद्ध एक पाप है जिसे इस युग या आने वाले युग में क्षमा नहीं किया जा सकता है।

और मुझे लगता है कि यही कारण है। लेकिन किसी भी मामले में, यहाँ प्रतिमान यही है। यह आत्मा है जो पुत्र के माध्यम से राज्य की सामग्री का उत्पादन करने के लिए काम कर रही है।

प्रस्ताव यह है कि, सृष्टि के विवरण में, आत्मा पूर्व-अवतार वाले वचन के माध्यम से उन राज्य के शब्दों और कार्यों को उत्पन्न करने के लिए काम कर रही थी। इसलिए जब हम पढ़ते हैं, प्रकाश हो, तो वे शब्द, मैं प्रस्तावित करूँगा, आत्मा हैं, आत्मा थे। जैसा कि यीशु ने कहा, मेरे शब्द आत्मा हैं, बड़े अक्षर s. तो, सृष्टि के विवरण में, आत्मा पूर्व-अवतार वाले पुत्र के माध्यम से उन शब्दों को उत्पन्न करने के लिए काम कर रही थी जिन्होंने सृष्टि की।

आत्मा ही वह है जिसने उस अर्थ में कार्य करवाया। ठीक है, उस आधार पर कार्य करते हुए, हम पतन से पहले और फिर पतन के बाद देखते हुए यह प्रस्ताव करते हैं। पिता राज्य के कार्य को करने के लिए पूर्व-अवतार वचन के माध्यम से आत्मा को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

अगर हम यहाँ इस भाग को देखें, तो देहधारी वचन इस प्रस्ताव का आधार था। पिता देहधारी वचन के माध्यम से राज्य का कार्य करने के लिए आत्मा को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। हम जानते हैं कि अब पिता और पुत्र आत्मा को चर्च में और उसके माध्यम से राज्य का कार्य करने के लिए भेजते हैं।

और तर्कसंगत रूप से, हम कह सकते हैं कि, पुराने नियम की अवधि के दौरान, जब वह कार्य कर रहा था, या उससे भी पहले, नूह या अब्राहम के साथ, पिता और पुत्र आत्मा को एक भविष्यद्वक्ता के माध्यम से राज्य का कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। यह सरल प्रतिमान समझ में आता है। देहधारी वचन, चर्च और मुझे लगता है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में भाग बहुत अच्छे हैं; मुझे लगता है कि हम सभी उन पर सहमत हो सकते हैं।

सवाल यह है कि क्या सृष्टि के समय यही गतिशीलता थी? मुझे लगता है कि इस बात के संकेत हैं कि ऐसा ही है। निश्चित रूप से, अगर यह सच है, तो दिखाया गया है कि ईश्वर जिस तरह से काम करना चुनता है, उसमें वह बहुत सुसंगत है। इसलिए, यह वह प्रमुख प्रतिमान है जिसके साथ हम इस पहले व्याख्यान को समाप्त करेंगे।

परमेश्वर अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने और उन्हें हराने के लिए, वचन, एक भविष्यद्वक्ता के रूप में, अपनी आत्मा के द्वारा कार्य करता है। लेकिन, यह, निश्चित रूप से, पतन के बाद ही होगा

क्योंकि पतन से पहले कोई शत्रु नहीं था। फिर, वह ऐसे लोगों के साथ वाचा स्थापित करता है जहाँ लोग हैं।

कभी-कभी, यह केवल एक व्यक्ति और एक परिवार होता है, जैसा कि नूह के मामले में था, और फिर अब्राहम के साथ कुछ और लोग। लेकिन उस वाचा ने उन वाचा भागीदारों, जागीरदारों को परमेश्वर के लोगों के रूप में स्थापित किया। और फिर, जब इसके लिए सही समय आता है, तो वह उनके बीच एक मंदिर स्थापित करता है।

तो, मूल वाचा में, यह अदन रहा होगा। और मूसा की वाचा में, यह तम्बू और मंदिर रहा होगा। और नई वाचा में, यह हम होंगे क्योंकि वह हमारे बीच रहना चाहता है।

हम यहीं रुकेंगे।

यह डॉ. जेफरी नीहौस हैं जो बाइबिल धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1, आदमिक वाचा, भाग 1 है।